[illegible]वर्णध्रुवांकचक्रम्

व	ध्रु	व	ध्रु	व	ध्रु	व	ध्रु
अ	[illegible]	क	१३	ठ	१३	ब	२६
आ	[illegible]	ख	११	ड	२२	भ	२७
इ	१२	[illegible]	२१	ढ	३५	म	८६
ई	[illegible]	घ	३०	ण	४५	य	१६
उ	[illegible]	ङ	१०	त	१४	र	१३
ऊ	२२	च	१५	थ	१८	ल	१३
[illegible]	[illegible]	छ	२१	द	१७	व	३५
ए	३२	ज	२३	ध	१३	श	२६
[illegible]	[illegible]	झ	२६	न	३५	ष	३५
[illegible]	[illegible]	ञ	१६	प	२८	स	[illegible]
		ट	[illegible]				

अंकचक्रम्

१	२	३
६	५	४
७	८	९

करलतत्व[illegible]संग्र

[illegible]जादिचक्रम्

सं	आय	वर्गाक्षर					स्वामी
१	ध्वज	अ	इ	उ	ए	ओ	सूर्य
२	धूम्र	क	ख	ग	घ	ङ	मंगल
३	सिंह	च	छ	ज	झ	ञ	शुक्र
४	श्वान	ट	ठ	ड	[illegible]	ण	बुध
५	वृष	त	थ	द	[illegible]	न	बृहस्पति
६	खर	प	फ	ब	भ	म	शनि
७	गज	य	र	ल	व	०	चन्द्र
८	ध्वांश	श	ष	स	ह	०	राहु

खेमराज
श्रीकृष्णदास
प्रकाशन

श्रीः

केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह

श्रीकाशीप्रान्तान्तर्गततेनारीग्रामनिवासिपं० रघुनन्दनशर्मात्मज-

दैवज्ञश्रीशालग्रामत्रिपाठिविरचित-

हिन्दीटीकासहित

ज्योतिष पा० पु० 356

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

90632
3986

भूमिका

★

ज्योतिषशास्त्रमें प्रश्न कहनेके बहुत ग्रन्थ हैं, षट्पञ्चाशिका आदि कितनेही ग्रन्थ विद्वन्मान्य होनेपर भी साधारण ज्योतिषियोंके कामके नहीं क्योंकि उनमें लग्न और नवांश आदियोंका निश्चय कर लेना कठिन पडता है। समयके प्रभावसे आज कल सिद्धान्ती ज्योतिषी सर्वत्र नहीं मिल सकते। इस दिशामें विना परिश्रम प्रश्न कहा जा सके ऐसे प्रश्नग्रन्थोंसे अधिक लाभ उठा सकते हैं। यह केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह बडा सहज और उत्तम भूत, भविष्य बतलानेवाला ग्रन्थ है। इसमें लग्न साधन आदिकी कुछ आवश्यकता नहीं। प्रश्नकर्ता बैठते समय जिस दिशाकी ओर मुख करके प्रश्न किया हो उसके विचारसे शरीरकी चेष्टा आदिसे, जिस सवारीमें चढकर प्रश्नकर्ता आया हो उससे और जिस प्रकारके अक्षर वह बोला हो उनसे ऐसेही और भी कई शकुनादिसे प्रश्न कहनेकी विधि है, इस ग्रन्थमें मूकप्रश्न, मुष्टिकप्रश्न, नष्टजन्मपत्रका प्रश्न तथा लाभालाभादि और भी अनेक। प्रकारके प्रश्नोंका संग्रह है। जहांतक मेरी बुद्धिमें आया मैंने इसकी सरल हिन्दीटीका बनाई है यद्यपि संस्कृत जाननेवालों के लिए इसके समझने में कुछ कठिनता नहीं है तथापि सर्व साधारण इसको जानकर प्रश्न कह सकें इसके लिये मैंने सरल हिन्दी भाषामें टीका बनाई है इसमें बुद्धिदोष, दृष्टिदोष आदिसे जो न्यूनता रह गई हो तो विद्वान् उसको क्षमा करें।

इस ग्रन्थकी टीका बनानेमें जौनपुरप्रान्तस्थ दतावें ग्रामनिवासी पं० श्यामसुन्दर द्विवेदी ने बडी सहायता दी है मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

दोहा—केरलप्रश्न ग्रन्थकी, टीका रच्यों विचारि।
भूल चूक जो हो कहीं, बुधजन लेंहि सुधारि ॥१॥

अपनी बनायी हुई टीकासहित इस ग्रन्थके पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार मैंने "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसके अध्यक्ष श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको देता हूं।

—पं. शालग्राम

अथ केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रहविषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठानि.
पूर्वार्द्धम्	
मंगलाचरणम्	७
प्रश्नप्रयोजनम्	"
प्रश्नकथने योग्यानयोग्यानाह	"
प्रश्नकर्तुर्नियमः	८
प्रष्टुर्दिङ्नियमः	"
प्रश्नसमये शुभशकुनमाह	"
अष्टविधप्रश्नाः	९
अथैषां लक्षणानि फलसहितानि च	"
इष्टांकोपरि प्रश्नः	१२
पूर्वादिदिग्भ्यो प्रश्नः	"
शरीरस्पर्शन प्रश्नः	"
अंकेऽङ्गुलिनिधान प्रश्नः	१३
अथाक्षरोपरि प्रश्नविधिः	"
प्रकारान्तरेण	"
पिंडार्थ ध्रुवांकाः	१४
लाभालाभ प्रश्नः	१५
जयपराजय प्रश्नः	"
सुखदुःख प्रश्नः	१६
गमनप्रश्नः	"
जीवनमरणप्रश्नः	"
तीर्थयात्राप्रश्नः	"
वर्षाप्रश्नः	१७
गर्भोऽस्ति न वेति प्रश्नः	"
मूकप्रश्नः	"
धातुज्ञानम्	१८
मूलनिर्णयः	"
अंगस्पर्शेन मूलज्ञानम्	१९
नष्टवस्तुज्ञानम्	"
चिन्ताप्रश्नः	२०
कार्यावधि प्रश्नः	
सुभिक्षदुर्भिक्षप्रश्नः	

विषयाः	पृष्ठानि.
जयपराजयसन्धिप्रश्नः	२१
सत्यासत्यप्रश्नः	"
पुंस्त्रीप्रश्नः	"
अस्यां गर्भोऽस्ति नवेति प्रश्नः	"
पुत्रकन्याजन्मेति प्रश्नः	२२
गर्भो ममान्यस्य वेति प्रश्नः	"
विवाहप्रश्नः	"
इदानीमायुर्वक्ष्ये	२३
अश्वादिप्राप्ति प्रश्नः	"
अमुकादद्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति नवेति प्रश्नः	"
कियद् द्रव्यप्राप्तिरिति प्रश्नः	"
दूतश्चलितो नवेति प्रश्नः	२४
पांथप्रश्नः	"
अमुकस्य मेलनं भविष्यति नवेति प्रश्नः	"
मित्रस्य तथा चौरादिकस्य मिलनं भविष्यति नवेति प्रश्नः	२
नष्टजातकम्	२
सिद्धयसिद्धिप्रश्नः	२
इति पूर्वार्धम् ।	
अथोत्तरार्द्धम्	
ध्वजाद्यायप्रश्नः	"
आयनामानि	२
ध्वजादिस्वामिनः	"
कार्याकार्यप्रश्नः	२
मनोविचारितकार्यप्रश्नः	"
लाभालाभप्रश्नः	"
नष्टवस्तुलाभालाभप्रश्नः	"
चौरजातिज्ञानम्	"
नष्टवस्तुदिग्ज्ञानम्	३
नष्टवस्तुस्थानज्ञानम्	"

विषयाः	पृष्ठानि.	विषयाः	पृष्ठानि.
प्रवासिकुशलप्रश्नः ...	... ,,	व्यवहारप्रश्नः ...	... ३५
प्रवासिचरस्थिर प्रश्नः ...	... ३१	राज्यप्राप्तिप्रश्नः ...	... ,,
गमनप्रश्नः ...	... ,,	नौकाप्रश्नः ...	... ,,
गमनसमयप्रश्नः ...	... ,,	अधिकारप्राप्तिप्रश्नः ...	... ,,
धातुजीमूलचिन्ताप्रश्नः ...	... ,,	ग्रामप्राप्तिप्रश्नः ...	... ३६
मुष्टिप्रश्नः ...	... ३२	कार्यसिद्धिप्रश्नः ...	... ,,
कन्यापुत्रजन्मप्रश्नः ...	... ३३	वन्दिमोक्षप्रश्नः ...	... ,,
आयुःप्रमाणम् ...	... ,,	देवपूजा ...	... ,,
जयपराजयप्रश्नः ...	... ३४	दानादि ...	... ३७
शत्रोरागमनप्रश्नः ...	... ,,	कालनियमप्रश्नः ...	... ,,
वृष्टिप्रश्नः ...	... ,,	नारदोक्तांगादिविद्या ...	... ,,
दिनादिज्ञानम् ...	... ,,	प्रश्नाक्षरोपरि लग्नज्ञानम् ...	... ३९
स्त्रीलाभप्रश्नः ...	... ,,	इत्युत्तरार्धः समाप्तः ।	

इति केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रहविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीः

अथ केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रहः

हिन्दीटीकासहितः

पूर्वार्द्धम्

श्रीगणेशाय नमः

साक्षात्त्रैलोक्यबोधाय प्रश्नाः केरलभाषिताः ।।
त्रिकालविषयाः प्रोक्तास्तस्मै केरलये नमः ।। १ ।।

सदाशिवं नमस्कृत्य देवीं चैव सरस्वतीम् ।
बालानां सुखबोधाय भाषाटीकां करोम्यहम् ।।

अर्थ – तीनों लोकोंका प्रत्यक्ष बोध होनेके निमित्त केरलभाषितप्रश्न जिसमें तीनों काल (भूत, भविष्य, वर्तमान) के प्रश्न कहे हैं उसके वक्ता तिस केरलिके लिये नमस्कार है ।। १ ।।

ज्ञानदीपकमासाद्य वर्ति कृत्वा सदक्षरैः ।।
स्वरस्नेहेन संयोज्य ज्वलयेदुत्तरेन्धनैः ।। २ ।।

अर्थ – ज्ञान (दृष्टादृष्टपदार्थ जाननेकी शक्ति) रूपी दीपकका आश्रय लेकर, उत्तम अक्षरों की बत्ती बनाकर, स्वररूपी तेल डालकर, प्रश्नोंके उत्तररूपी ईंधनोंसे प्रज्वलित करदेय ।। २ ।।

अथ प्रश्नस्य प्रयोजनम्

दैवज्ञस्य हि दैवेन सदसत्फलवाञ्छया ।।
अवश्ये केरले मर्त्यः सर्वः समुपनीयते ।। ३ ।।
अश्रौषीच्च पुरा विष्णोर्ज्ञानार्थे समुपस्थितः ।।
वचनं लोकनाथोपि ब्रह्मा प्रश्नादिनिर्णयम् ।। ४ ।।

अर्थ – पूर्वजन्मार्जित कर्मको दैव कहते हैं मनुष्य जैसा शुभाशुभ कर्म करता है वैसा ही फल पाता है, उस कर्मके परिपाकको जाननेकी इच्छा दैवज्ञकी हो तो केरल शास्त्रसे प्रश्नद्वारा संपूर्ण जान सकता है ।। ३ ।। लोकनाथ ब्रह्माजी ज्ञानके अर्थ विष्णु भगवान्के पास गये उनसे प्रश्नादिकोंका निर्णय सुनते भये ।। ४ ।।

अथ प्रश्नकथने अयोग्यान्योग्यांश्चाह

क्षुद्रपाखंडधूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके ।।
ज्ञानं न तथ्यतामेति यदि शंभुः स्वयं वदेत् ।। ५ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला क्षुद्र हो, पाखंडी हो, धूर्त हो, श्रद्धाहीन हो, उपहास करने वाला हो ऐसे प्रश्न करनेवालेका प्रश्न नहीं कहना क्योंकि इनका प्रश्न सच्चा नहीं होता शिवजी भी स्वयं कहे तो भी । इस वास्ते पहले परीक्षा करके फिर प्रश्न कहना ।। ५ ।।

अथ प्रश्नकर्तृनियमः 2080

तस्मान्नृपः कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः प्रातः प्रणम्य वरयेदपि प्राङ्मुखस्थः ॥
होरांगशास्त्रकुशलान् हितकारिणश्च संहृत्य दैवगणकान् सकृदेव पृच्छेत् ॥६॥

अर्थ – इसीसे राजा[1]को चाहिये कि प्रातःकाल पुष्प, रत्न, फलादि मंगल द्रव्य दाहिने हाथमें लेकर तदनन्तर होराशास्त्रमें कुशल हितकारी दैवज्ञों (ज्योतिषियों) को इकट्ठा करके पूर्व मुखसे स्थित होकर प्रथम प्रणामपूर्वक वरण करके एकवार प्रश्न करे ॥ ६ ॥

फलपुष्पयुतो यो हि दैवज्ञं परिपृच्छति ॥
तस्यैव कथये प्रश्नं सत्यं भवति नान्यथा ॥७ ॥

अर्थ – फल, पुष्पयुत हो करके अर्थात् ज्योतिषीके वास्ते भेट लेकर जो मनुष्य प्रश्न करता है उसको ही प्रश्न कहना चाहिये ऐसेही पृच्छकका प्रश्न यथार्थ घटता है अन्यथा सत्य नहीं होता ॥ ७ ॥

सभाप्रश्नो न वक्तव्यः कुटिलानां तथा निशि ॥
नापराह्णे त्वविश्वस्य त्वरितं न वदेत्कदा ॥ ८ ॥

अर्थ – कुटिलजनोंकी सभामें प्रश्न नहीं कहना चाहिये तथा रात्रिसमयमें और दुपहरसे ऊपरमें, व विश्वास न करनेवाले पुरुषके प्रति तथा शीघ्रतासे (अर्थात् बिना विचारे जल्दीसे) प्रश्न कभी भी न कहे ॥ ८ ॥

भक्तार्तदीनवदने दैवज्ञो न दिशेद्यदि ॥
विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत् ॥ ९ ॥

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला भक्त हो तथा पीडित हो चिन्ता करके मुखमलीन हो ऐसे प्रश्न करनेवालेका प्रश्नफल यदि दैवज्ञ न बतावे तो उस ज्योतिषका ज्ञान नष्ट हो जाता है तिस कारणसे ऐसे प्रश्न करनेवालेके प्रश्नफलको सदा बतावै ॥ ९ ॥

अथ प्रष्टुर्दिङ्नियमः २०५८

प्राची प्रतीची माहेशी कौबेरी दिक् शुभावहा ॥
अप्राची राक्षसी दुष्टा शून्याऽग्नेयी च मारुती ॥ १० ॥

अर्थ – प्रश्न करनेवाला यदि पूर्व, पश्चिम, ईशान, उत्तर दिशामें बैठकर प्रश्न करे तो शुभ जानना चाहिये और दक्षिण दिशामें बैठकर प्रश्न करे तो दुष्ट फलवाला जानना तथा अग्निकोण, वायव्यकोणमें बैठकर पूछै तो शून्यफल जानना ॥ १० ॥

अथ प्रश्नसमये शुभशकुनमाह २०५6,०५५,५

दृङ्मनसोः प्रीतिकरं प्रश्नेषु दर्शनं यदि श्रवणम् ॥
मांगल्यद्रव्याणां भवति शुभं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ ११ ॥
हयगजवृषहंसाद्यैः पृच्छाकाले यदा रुतं भवति ॥
दर्शनमथ वै तेषां शुभदं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ १२ ॥

---

१ यहां राजाशब्द उपलक्षणमात्र है यह नियम सबके लिये है ।

अर्थ – प्रश्नसमयमें दृष्टि तथा मनके प्रसन्न करनेवाले मंगलजनक द्रव्य दृष्टिगोचर वा श्रवणगोचर हों तो शुभ कहना चाहिये, तथा अश्व, गज (हाथी), बैल, हंसादिकोंका शब्द प्रश्न समयमें श्रवणगोचर हो या दिखाई दें तो शुभ फल जानना ।। ११ ।। १२ ।।

अथ प्रश्नं वक्ष्ये ।

तत्रादौ अष्टविधप्रश्नाः

संयुक्तः, असंयुक्तः, अभिहितः, अनभिहितः, अभिघातिकः, आलिंगितः अभिधूमितः दग्ध इति ।। १३ ।।

अर्थ – १ संयुक्त, २ असंयुक्त, ३ अभिहित, ४ अनभिहित, ५ अभिघातिक, ६ आलिंगित, ७ अभिधूमित, ८ दग्ध ये आठ प्रकारके प्रश्न हैं ।। १३ ।।

अथैषां लक्षणानि फलसहितानि

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये स्वकायं स्पृष्ट्वा पृच्छति ।।
तदा संयुक्तप्रश्नः स च लाभकरो भवति ।। १४ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला प्रश्नसमयमें अपने शरीरको स्पर्श करता हुआ पूछे तो संयुक्तनामक प्रश्न जानना वह संयुक्त प्रश्न लाभका करनेवाला होता है ।। १४ ।।

यदि पथि शयने दोलागजतुरंगारूढो वा भवति भावरहिते फलद्रव्यविवर्जिते नरे पृच्छति तदाऽसंयुक्तः प्रश्नः । अस्मिन्प्रश्ने बहुदिनानन्तरं लाभादि-सुखं भवति ।। १५ ।।

अर्थ – यदि पूछनेवाला रास्तामें हो, शयनागारमें हो, पालकीमें बैठा हो वा हाथी या घोडेपर सवार हो भावरहित (श्रद्धाहीन) हो, फल वा द्रव्य हाथमें न लिये हो ऐसा मनुष्य प्रश्न करे तो असंयुक्तनामक प्रश्न होता है इस प्रश्नमें बहुत दिनोंके बाद लाभादि सुख होता है ।।१५।।

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये वामहस्तेन वामांगं स्पृशति
तदाऽभिहितः प्रश्नः । अलाभकरो भवति ।। १६ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला प्रश्नसमयमें बायें हाथसे बायें अंगको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो अनभिहित नामक प्रश्न जानना सो हानिकारक होता है ।। १६ ।।

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये स्वहस्तेन परकायं स्पृशति
तदाऽनभिहितः प्रश्नः । कार्यस्यालाभकरो भवति ।। १७ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला अपने हाथसे दूसरेके शरीरको स्पर्श करके पूछे तो अनभिहितनामक प्रश्न जानना सो कार्यकी हानि करनेवाला होता है ।। १७ ।।

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये मस्तकं कटिं हृदयं हस्तं पादं च मर्दयेत् तदाऽभि-घातिकः प्रश्नः । शोकसन्तापकारको भवति ।। १८ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला प्रश्नसमयमें मस्तक, कमर, हृदय, हाथ तथा पांवको मलता हुआ प्रश्न करे तो अभिघातिक नाम प्रश्न होता है सो शोक संतापका करनेवाला है ।।१८।।

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये दक्षिणकरेण निजं दक्षिणांगं स्पृशति तदाऽऽलिंगितः प्रश्नः । लाभमुखादिकारको भवति ।। १९ ।।

अर्थ – यदि प्रश्नसमयमें प्रश्न करनेवाला दाहिने हाथसे अपने दाहिने अंगको स्पर्श करके प्रश्न करे तो आलिंगितनामक प्रश्न होता है सो लाभादि सुख करनेवाला होता है ।। १९ ।।

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये दक्षिणकरेण वामकरेण वा सर्वांगं स्पृशति तदाऽभिधूमितः प्रश्नः । अस्मिन् प्रश्ने किंचिल्लाभः मित्राद्यागमनं च ।। २० ।।

अर्थ – जो प्रश्न करनेवाला प्रश्न करते समय दाहिने हाथसे वा बायें हाथसे सब अंगोंको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो अभिधूमित नामका प्रश्न जानना इस प्रश्नमें किंचित् लाभ तथा मित्रोंका आगमन होता है ।। २० ।।

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये रोदनदुःखभयार्तिनीचस्थलसन्निधौ भक्तिभावरहितः पृच्छति तदा दग्धप्रश्न उदाहृतः । एष प्रश्नः शोकसंतापदुःखपीडाबहुलाभकरो भवति ।। २१ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला प्रश्नसमयमें रोता हुआ, दुःखी, भयसे व्याकुल, नीच स्थलके समीपमें, भक्तिभाव करके रहित होकर पूछे तो दग्धनामक प्रश्न होता है इस प्रकारका प्रश्न शोक, संताप, दुःख, पीडा तथा अत्यन्तहानि कारक होता है ।। २१ ।।

अथ जीवधातुमूलज्ञाननष्टद्रव्यस्थानबन्धमोक्षण-जीवितमरणजयपराजयलाभाऽलाभगमनाऽगमनत्रिकालप्रश्नान्प्रकाशयतीदं शास्त्रं नान्यथा ।। २२ ।।

अर्थ – जीव, धातु, मूलज्ञान, नष्टद्रव्यस्थान, बन्धन, मोक्षण, जीवित, मरण, जय (जीतना), पराजय, लाभ, हानि, जाना, आना, भूत, भविष्य, वर्तमानके प्रश्नोंको यह शास्त्र प्रकाशित करनेमें अत्यन्त श्रेष्ठ है । इसमें संदेह नहीं ।। २२ ।।

ऊर्द्धदृष्टया भवेज्जीवो ह्यधो दृष्टा च मूलकम् ।।
समदृष्टया भवेद्धातुर्मूलदेवेन भाषितम् ।। २३ ।।

अर्थ – यदि प्रश्न करनेवाला ऊपरको दृष्टि करके पूछै तो जीवसम्बन्धी प्रश्न जानना और नीचेको दृष्टि करके प्रश्न करे सो मूलसंबन्धी प्रश्न कहना चाहिये तथा सामने दृष्टि करके पूछै तो धातुसम्बन्धी प्रश्न हैं ऐसा जानना चाहिये ऐसा मूलदेवने कहा है ।। २३ ।।

यदा प्रष्टा प्रश्नं पृच्छति तदा दिनमानं त्रिभिर्विभज्योदये आलिंगितप्रश्नः ।। २४ ।। मध्यवेलायां अभिधूमितप्रश्नः ।। २५ ।। अस्तंगतवेलायां दग्धप्रश्नः ।। २६ ।। उदयवेलायां जीवधातुमूलम् ।। २७ ।। मध्यवेलायां धातुमूलजीवं वदेत् ।। २८ ।। अस्तंगतवेलायां मूलजीवधातुं वदेत् ।। २९ ।।

अर्थ – जिस वक्त प्रश्न करनेवाला व्यक्ति प्रश्न करै उस समय दिनमानका तीन भाग करना, पहला भाग सूर्योदय वेला, दूसरा भाग मध्याह्न वेला, तीसरा भाग अस्तंगतवेला जानना यदि उदय वेलामें प्रश्न किया जाय तो आलिंगित नामक प्रश्न जानना । तथा मध्य वेलामें यदि कोई व्यक्ति आकर प्रश्न करे तो अभिधूमितनामक प्रश्न जानना । तथा अस्तंगत वेलामें यदि कोई प्रश्न करै तो दग्धनामक प्रश्न जानना चाहिये । उदय वेलामें जीव, धातु, मूलसम्बन्धी प्रश्न पूर्वक

२ क्रमसे जानना चाहिये अर्थात् एक २ वेलामें भी तीन भाग कर देना जैसे उदय वेलाके पहले भाग में कोई व्यक्ति प्रश्न करे तो जीवसंबन्धी प्रश्न कहना, दूसरे भागमे धातुसम्बन्धी प्रश्न कहना तीसरे भागमें मूलसंबन्धी प्रश्न कहना । इसी तरहसे मध्यवेलाके भी तीनों भागोंमें धातु, मूल, जीवसंबन्धी प्रश्न क्रमसे कहना । ऐसेही अस्तंगत वेलाके भी तीन भाग करना उन तीनों भागोंमें किया हुआ प्रश्न मूलसंबन्धी, जीवसंबन्धी धातुसंबन्धी क्रमसे कहना ॥ २४–२९ ॥

तत्र त्रिभागस्थत्रिभागाज्जीवधातुमूलं वदेत् । यथा त्रिशद्धटयात्मकं दिनमानं तस्य त्रिभागो दश १० दंडात्मकः तस्य त्रिभागो दंडत्रयं विंशतिपलात्मकः । एवमन्यत्र वेलायामपि ज्ञेयम् ॥ ३० ॥

अर्थ – तहां दिनके तीन भागों में से प्रत्येक भागमें तीन २ भाग करके जीव, धातु, मूलसंबन्धी प्रश्न कहना जैसा ऊपर कहा है (उदाहरण) जैसे ३० तीस घटी दिनमान है तो उसका तीसरा भाग १० दश दंड हुआ अर्थात् पहिले १० दश दण्डतक उदयवेला जानना फिर दशसे उपरान्त २० बीश दण्डतक मध्य बेला जानना और बीससे उपरान्त ३० तीस तक अस्तंगत वेला जानना इसी प्रकार एक २ वेलामें भी तीन २ भाग करनेसे एक ९ भाग तीन दण्ड २० पलका होता है इस प्रकार करनेसे तीनों वेलाओंके ९ नव भाग हो गये प्रत्येक भागमें जीव, धातु, मूल । धातु, मूल, जीव । मूल, जीव, धातुसंबन्धी प्रश्न क्रमसे जानना इसी क्रमसे अन्य उदाहरण भी जानना ॥ ३० ॥

आलिंगितवेलायामालिंगितप्रश्ने आलिंगितफलम् ॥ ३१ ॥
आलिंगितवेलायामभिधूमितप्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥ ३२ ॥
आलिंगितवेलायां दग्धप्रश्ने दग्धफलम् ॥ ३३ ॥

अर्थ – आलिंगित वेलामें आलिंगित प्रश्न हो तो आलिंगितही फल कहना चाहिये यदि आलिंगित वेलामें अभिधूमित प्रश्न हो तो अभिधूमितही फल कहना चाहिये । आलिंगित समयमें यदि दग्ध प्रश्न हो तो दग्धवत् फल कहना चाहिये ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

अथाभिधूमितवेलायामभिधूमितप्रश्ने आलिंगितफलम् ॥ ३४ ॥ अभिधूमितवेलायां दग्धप्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥ ३५ ॥ अभिधूमितवेलायामालिंगितप्रश्ने दग्धफलम् ॥ ३६ ॥

अर्थ – इसके बाद अभिधूमित प्रश्नके समयमें अभिधूमित प्रश्न हो तो आलिंगित प्रश्नकी तरह फल जानना । अभिधूमित प्रश्नके समयमें अर्थात् दिनके भाग में जैसा पहले दग्ध प्रश्नका लक्षण कहा है, वैसा ही प्रश्न किया हो तो अभिधूमित फल कहना चाहिये तथा अभिधूमित प्रश्न के समयमें आलिंगित प्रश्न किया हो तो दग्धप्रश्नका जैसा फल है तैसाही फल कहना चाहिये ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

दग्धवेलायां दग्धप्रश्ने आलिंगितफलम् ॥ ३७ ॥ दग्धवेलायामालिंगितप्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥ ३८ ॥ दग्धवेलायामभिधूमितप्रश्ने दग्धफलम् ॥ ३९ ॥

अर्थ – दग्ध प्रश्नके समयमें दग्ध प्रश्न हो तो आलिंगितका जैसा फल कहा है वैसाही फल कहना चाहिये । दग्ध प्रश्नके समयमें आलिंगित प्रश्न किया हो तो अभिधूमित प्रश्नका जैसा फल

पूर्वमें कह आये हैं वैसा ही फल कहना चाहिये । दग्ध प्रश्नके समयमें अभिधूमितलक्षणवालाप्रश्न किया हो तो जैसा दग्ध प्रश्नका फल कहा है वैसाही फल कहना चाहिये ।।३७।।३८।।३९।।

उदाहरण

अब इन प्रश्नोंको दिखाते हैं, जैसे संवत् १९६८ ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष १ प्रतिपदाको इष्ट १५ । ३० पर किसीने प्रश्न किया तो उस दिन दिनमान ३३ । २६ है उसका तीन भाग किया तो ११ । ८ । ४० हुआ तो दिनके मध्य भागमें प्रश्न आया इसलिये अभिधूमित प्रश्न हुआ अभिधूमित प्रश्नमें प्रथम धातु फिर मूल फिर जीव इस तरहसे कहना फिर दिनमानके दूसरे भागमें ११ । ८ । ४० को भी तीन भाग किया तो ३ । ४२ । ४० । हुआ इसको ११ । ८ । ४० में जोडा तो १४ । ५१ । २० हुआ तथा अपने इष्ट १५ । ३० में इसको घटाया तो शेष० । ३८ । ४० । रहा याने दिनमानके दूसरे भागके भी दूसरे भागमें प्रश्न आया इससे मूल प्रश्न कहना । प्रश्नकर्ता अपने बायें हाथको शिरसे लगाकर प्रश्न किया है इस वास्ते "अभिघातिक" प्रश्न हुआ यह शोक को तथा संतापको करनेवाला है इसी तरहसे अन्य भी जानना ।।

अथेष्टांकोपरि प्रश्नकथनम्

इष्टमंकं द्विगुणितमेकेन सह संयुतम् ।।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत् ।। ४० ।।
चन्द्रशेषे जीवचिन्ता समे धातुः प्रकीर्तितः ।।
शून्ये मूलं विजानीयाच्छारदावचनं यथा ।। ४१ ।।

अर्थ – इष्ट अंक (अर्थात् सूर्योदयसे जिस वक्त पर कोई आकर प्रश्न करै उस समयका इष्ट बनाना उसको) दूना करै फिर एक जोड दे फिर उसमें तीनका भाग देकर बाकी बचे अंकोसे फल कहै ।। ४० ।। अर्थात् यदि १ एक शेष रहे तो जीवचिन्ता कहना तथा २ दो शेष रहे तो धातुसबन्धी चिन्ता कहना तथा० शून्य शेष रहे तो मूलसंबन्धी प्रश्त कहता ।। ४० ।। ४१ ।।

अथ पूर्वादिदिग्भ्यो मूकप्रश्नकथनम् ।

पूर्वस्यां धातुचिन्ता स्याज्जीवं दक्षिणतस्तथा ।।
उत्तरस्यां वदेन्मूलं पश्चिमे मिश्रितं फलम् ।। ४२ ।।

अर्थ – प्रश्न करनेवाला यदि पूर्वकी तरफ मुख करके प्रश्न करै तो धातु चिन्ता है ऐसा कहना, और यदि दक्षिणदिशाकी तरफ मुख करके प्रश्न करै तो जीवचिन्ता कहना, तथा उत्तरकी तरफ मुख करके प्रश्न करै तो मूलचिन्ता कहना, इसी प्रकारसे पश्चिमकी तरफ मुख करके प्रश्न करे तो मिश्रित फल कहना अर्थात् धातु, मूल, जीव तीनों मिला हुआ प्रश्न कहना ।। ४२ ।।

अथ शरीरस्य स्पर्शेन प्रश्नकथनम् ।

शिरःस्पर्शे तु जीवः स्यात्पादस्पर्शे तु मूलकम् ।।
धातुश्च मध्यमस्पर्शे शारदावचनं यथा ।। ४३ ।।
बाहुवक्त्रशिरस्पर्शे जीवचिन्ता शुभावहा ।।
हृदयोदरसंस्पर्शे धातुचिन्ता तु मध्यमा ।। ४४ ।।
गुदवृषणसंस्पर्शे चाधमं मूलचिन्तनम् ।।
जानुजंघापदस्पर्शे जीवचिन्तां विनिर्दिशेत् ।। ४५ ।।

अर्थ – प्रश्न समयमें प्रश्न करनेवाला यदि शिरको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो जीव प्रश्न जानना और यदि पैरको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो मूलचिन्ता जानना और यदि प्रश्न करनेवाला प्रश्नसमयमें मध्यस्थान (कमर) को स्पर्श करे तो धातुचिन्ताका प्रश्न कहना यह शारदाजीका कहा हुआ है ।। ४३ ।। अब विस्तारसे उसी बातको दिखाते हैं कि यदि प्रश्नकर्ता प्रश्नसमयमें भुजा, मुख और शिरको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करै तो शुभदायी जीवचिन्ताका प्रश्न कहना और हृदय, उदर (पेट) को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो मध्यम धातु (धनादि) चिन्ताका प्रश्न कहना ।। ४४ ।। और यदि गुदा, वृषण (मुष्क) को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो अधम मूलचिन्ता कहना और यदि जानु, जंघा, पदको प्रश्नसमयमें स्पर्श करे तो जीवचिन्ताका प्रश्न कहना ।। ४५ ।।

अथ अंकोपरि अंगुलीस्थापनेन फलकथनम् ।

न दृश्यतेऽष्टद्वितयेच कार्यं रसैः समुद्रैर्निजकार्यसिद्धिः ।। सप्तत्रयोंकाः
कथयन्ति धैर्यं नवैकपञ्च त्वरितं वदन्ते ।। ४६ ।।

अर्थ – यदि ८ आठके अंकपर वा २ दोके अंकपर अंगुली परे तो कार्य नहीं होगा ऐसा कहना और ६ छठे या ४ चौथे अंक पर अंगुली परे तो स्वकार्यकी सिद्धि कहनी यदि ७ सात या ३ तीनके अंक पर अँगुली परे तो विलम्बसे कार्य होगा ऐसा कहना तथा ९ नौ या १ एकके वा ५ पांचके अंक पर अंगुली रक्खै तो शीघ्र (जल्दी) कार्य होगा ऐसा कहना ।। ४६ ।।

इसी चक्रमें अँगुली रखाकर प्रश्न कहना चाहिये ।

अंकचक्रम् ।

१	२	३
६	५	४
७	८	९

अथाक्षरोपरि प्रश्नविधिः

पूर्वाह्णे बालमुखात्पुष्पनाम तु ग्राहयेत् ।।
मध्याह्ने युवतिमुखात्फलनाम च ग्राहयेत् ।। ४७ ।।

अर्थ – दिनके प्रथम भागमें [1]बालकके मुखसे पुष्पका नाम कहालाना चाहिये तथा द्वितीय भागमें स्त्रीके मुखसे फलका नाम कहालाना चाहिये ।। ४७ ।।

अपराह्णे वृद्धमुखाद्वृक्षनाम च ग्राहयेत् ।।
नद्या वा ग्राहयेन्नाम रात्रौ सर्वमुखाद् बुधः ।। ४८ ।।

अर्थ – तथा तीसरे भागमें वृद्धके मुखसे वृक्षका नाम ग्रहण कराना चाहिये । तथा रात्रिमें सबके मुखसे अर्थात् बालक, स्त्री, वृद्धके मुखसे पुष्पादि सबका नाम ग्रहण कराना चाहिये वा केवल नदीहीका नाम ग्रहण कराना चाहिये ।। ४८ ।।

अथ प्रकारान्तरेण ।

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने फलनाम तु ।।
अपराह्णे देवनाम सायं नदनदीं वदेत् ।। ४९ ।।

---

१ यहां बालक आदिके अभावमें प्रश्नकर्ताके मुखसे पुष्पादिका नाम कहलाना चाहिये ।

अर्थ – प्रातःकालमें पुष्पका नाम ग्रहण कराना चाहिये और मध्याह्नमें फलका नाम बोलवाना चाहिये तथा अपराह्णमें अर्थात् दिनके तीसरे भागमें देवताका नाम ग्रहण कराना चाहिये तथा सायंकालमें नद वा नदियोंका नाम ग्रहण कराना चाहिये ॥ ४९ ॥

अथवा

पृच्छकस्य वाक्याक्षराणि स्वरसंयुक्तानि ग्राह्याणि । यदि च प्रश्नाक्षराण्यधिकान्यस्पष्टानि भवेयुस्तदायं विधिः ॥ ५० ॥

अर्थ – अथवा पृच्छकके मुखसे जो अक्षर प्रश्न करते समय निकलें उनको स्वरसंयुक्त ग्रहण करे यदि प्रश्नके अक्षर अधिक हों जो कि ग्रहण करनेमें न आवें अथवा स्पष्ट सुननेमें न आवें तो पुष्पादिका नाम कहलाना चाहिये ॥ ५० ॥

यथा ।

यदि प्रश्नकर्ता ब्राह्मणस्तदा तन्मुखात्पुष्पस्य नाम ग्राहयेत् ॥ ५१ ॥ यदि प्रश्नकर्ता क्षत्रियस्तदा कस्याश्चिन्नद्या नाम ग्राहयेत ॥ ५२ ॥ यदि प्रश्नकर्ता वैश्यस्तदा देवानां मध्ये कस्यचिद्देवस्य नाम ग्राहयेत् ॥ ५३ ॥ यदि प्रश्नकर्ता शूद्रस्तदा कस्यचित्फलस्य नाम ग्राहयेत् ॥ ५४ ॥

अर्थ – यदि प्रश्नकर्ता ब्राह्मण हो तो उसके मुखसे (प्रश्नाक्षर स्पष्ट न मालूम भये हों अथवा विशेष हों तो) पुष्पका नाम कहवाना चाहिये ॥ ५१ ॥ तथा क्षत्री हो तो पृच्छकके मुखसे किसी नदीका नाम बुलवाकर उससे प्रश्न कहना चाहिये ॥ ५२ ॥ इसी तरह प्रश्नकर्ता वैश्य अर्थात् बनिया हो तो उसके मुखसे किसी देवताका नाम बुलवाकर उसपरसे प्रश्न विचारना चाहिये ॥ ५३ ॥ और यदि प्रश्नकर्ता जातिका शूद्र हो तो उसके मुखसे किसी फलका नाम कहाकर उससे प्रश्नका भेद अर्थात् धातु, मूल, जीवादि विचारकर कहै ॥ ५४ ॥

अथ पिंडार्थ ध्रुवांकाः ।

अर्कः प्रकृतिरीशानोधृतिः पंचदशस्त । ॥
जातिरष्टादश रदा स्तत्त्वा न्येकोर्नविंशतिः ॥ ५५ ॥
तत्त्वं विश्वे भवाएक विंशतिः खाग्निदिक् तिथिः ॥
मूर्च्छना रामनेत्राणिततः षड्विंश तिःस्मृतः ॥ ५६ ॥
षड्विंश दश विश्वौ क्षि अक्षिपंचगुण स्तथा ॥
पंचाब्धि मनु धृत्या ष्टी रामन्दु शरवह्नयः ॥ ५७ ॥
वस्वक्षि धृतिर्षड्विंश तारकाः षड्गजा स्तथा ॥
कला विश्वा त्रिचन्द्रा श्चबाणरामा स्तथास्मृताः ॥ ५८ ॥
ऋत्वक्षिशररामा श्चबाणरामा स्तथाइनाः ।
अकारादिहकारान्तवर्णानांतु ध्रुवाः स्मृताः ॥ ५९ ॥

अर्थ – प्रश्नकर्ताके अथवा बालक आदिके मुखसे जो अक्षर प्रथम ग्रहण किये हैं उनके वर्ण व मात्राओंको पृथक् २ करके आगे कहे हुए रीति से उनका अंक ग्रहण करे

मात्रावर्णध्रुवांकचक्रम् ।

व	ध्रु	व	ध्रु	व	ध्रु	व	ध्रु
अ	१२	क	१३	ठ	१३	ब	२६
आ	२१	ख	११	ड	२२	भ	२७
इ	११	ग	२१	ढ	३५	म	८६
ई	१८	घ	३०	ण	४५	य	१६
उ	१५	ङ	१०	त	१४	र	१३
ऊ	२२	च	१५	थ	१८	ल	१३
ए	१८	छ	२१	द	१७	व	३५
ऐ	३२	ज	२३	ध	१३	श	२६
ओ	२५	झ	२६	न	३५	ष	३५
औ	१९	ञ	२६	प	२८	स	३५
अं	२५	ट	१०	फ	१८	ह	१२

दैवज्ञको चाहिये कि उच्चारित पुष्पादिके मात्रावर्गोंको बहुत ध्यानसे विचार कर फिर उनके अंकोंको ग्रहण कर पिंड बनाकर उससे फल कहे वह अक्षरांक इस प्रकार है कि अ १२, आ २१, इ ११, ई १८, उ १५, ऊ २२, ए १८, ऐ ३२, ओ २५, औ १९, अं २५, क १३, ख ११, ग २१, घ ३०, ङ १०, च १५, छ २१, ज २३, झ २६, ञ २६, ट १० ठ १३, ड २२, ढ ३५, ण ४५, त १४, थ १८,, द १७, ध १३, न ३५, प २८, फ १८, ब २६, भ २७, म ८६, य १६, र १३, ल १३, व ३५, श २६, ष ३५, स ३५, ह १२ यह अकार से लेकर हकार तक वर्णोंका ध्रुवांक हुआ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

अथ लाभालाभप्रश्नः

लाभालाभे द्विचत्वारि ४२ क्षेपे भागस्त्रिभिः स्मृतः ॥ एकशेषे च लाभः स्याद्द्विशेषे स्वल्पलाभकः ॥६०॥ शून्यशेषे तु हानिः स्याल्लाभालाभस्य लक्षणम् ॥

अर्थ – लाभ तथा हानिके प्रश्नमें ४२ क्षेपकका अंक जोड देना चाहिये अर्थात् पहिले प्रश्नकर्ताके मुखसे जो पुष्पादिकोंका नाम ग्रहण कराया है स्वरसहित उन अक्षरोंका ध्रुवांक जोडकर पिंड बना लेना उस पिंडमें ४२ क्षेपक जोडकर फिर ३ तीनका भाग देना १ एक बचे तो पूर्ण लाभ कहना २ बचे तो थोडा लाभ कहना ॥६०॥ शून्य शेष रहे तो हानि कहना यह लाभालाभकी आकृति कहा ॥

उदाहरण

जैसे किसी प्रश्नकर्ताने फलका नाम उच्चारण किया कि "आम" इसमें पहले (आ और अ) यह दो स्वर है) और (म्) यह एक वर्ण है इसमें पहले ध्रुवांक (आ) का २१ तथा (अ) का १२ और (म्) का ८६ हुआ इन सबोंको जोड ११९ भया तथा उसका लाभालाभ है इसलिये ११९ पिंडमें ४२ क्षेपक और जोडा तो १६१ हुआ इसमें ३ तीनका भाग दिया शेष २ रहा तो कहना कि थोडा लाभ होगा इसी प्रकार सर्वत्र विचारना चाहिये ॥

अथ जयपराजयप्रश्नः

जयाजयेक्षेपकास्तुचतुस्त्रिशत्प्रकीर्तिताः ॥ ६१ ॥
रामैर्भागं समाहृत्य एकशेषे जयं वदेत् ॥
द्वाभ्यां सन्धि वदेत्प्राज्ञः शून्यशेषे पराजयः ॥ ६२ ॥

अर्थ – जय तथा पराजय प्रश्नमें क्षेपक ३४ चौतीस कहा है ॥ ६१ ॥ अर्थात् अक्षरपिंड में ३४ जोडकर ३ का भाग दे १ शेष रहे तो जय होगा ऐसा कहना तथा २ शेष रहे तो संधि हो जायगी ऐसा कहना ० शून्य शेष रहे तो प्रश्नकर्ताका पराजय कहना ॥ ६२ ॥

अथ सुखदुःखप्रश्नः

सुखदुःखक्षेपकस्तुह्यष्टरामाःस्मृताबुधैः ॥
अत्रभागोलोचनाभ्यामेकशेषेसुखंभवेत् ॥ ६३ ॥
शून्येदुःखंविजानीयात्सुखदुःखस्यलक्षणम् ॥

अर्थ – सुख दुःखके प्रश्नमें ३८ क्षेपको अंक दैवज्ञोंने कहा है । पिंडांकमें क्षेपकांकको जोड कर २ दोका भाग देना १ शेष रहे तो सुख होता है ॥ ६३ ॥ ० शून्य शेष रहनेसे दुःख जानना चाहिये यह सुखदुःखके प्रश्नका चिह्न है.

अथ गमनप्रश्नः

गमनेरामरामाश्चक्षेपकाः परिकीर्तिताः ॥ ६४ ॥
त्रिभिर्भागं समाहृत्य ह्येकशेषेगमःस्मृतः ॥
द्वाभ्यां स्थितिर्विनिर्दिश्याशून्येहानिः स्मृताबुधैः ॥ ६५ ॥

अर्थ – यात्राके प्रश्नमें ३३ तैंतीस क्षेपकांक कहा है ॥ ६४ ॥ इस क्षेपांकको पिंडांकमें जोडकर ३ तीनका भाग देकर शेष अंकसे प्रश्न कहे । १ शेष रहे तो कहना कि अभी यात्रा होगी । २ शेष रहे तो कहना कि अभी यात्रा नहीं होगी । शून्य शेष रहनेसे पंडितोंने हानि कहा है ॥ ६५ ॥

अथ जीवनमरणप्रश्नः

जीवनेमरणेक्षेपाश्चत्वारिंशत्प्रकीर्तिताः ॥
अथभागस्त्रिभिर्ग्राह्यः शेषांकेनफलंस्मृतम् ॥ ६६ ॥
एकेनजीवनंवाच्यंकष्टसाध्यंद्विशेषके ॥
शून्येतुमरणंप्रोक्तंज्ञातव्यंसर्वदाबुधैः ॥ ६७ ॥

अर्थ – जीने तथा मरनेके प्रश्नमें अर्थात् कोई व्यक्ति आकर पूछै कि अमुक आदमी जीवित है या मर गया अथवा जीवेगा या मरेगा ? ऐसे प्रश्नमें ४० क्षेपकांक कहा है । इस क्षेपांकको पिंडांक में जोडकर फिर ३ तीनका भाग देकर शेष अंकसे फल कहना. जैसे १ शेष रहे तो कहना कि अभी नहीं मरा है अर्थात् जीवित है । २ दो शेष रहनेसे कष्टसाध्य कहना अर्थात् बहुत यत्नसे बचैगा । ० शून्य शेष रहनेसे मरण कहा है अर्थात् जिस व्यक्तिके वास्ते पूछा है वह मर गया है या मर जायगा ऐसा सर्वदा याने सब कालमें पंडितोंकरके जानना चाहिये ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

अथ तीर्थयात्राप्रश्नः

यात्राप्रश्नेक्षेपकस्तुनवरामामितःस्मृतः ॥
रामैर्भागंसमाहृत्ययात्रास्यादेकशेषके ॥ ६८ ॥
द्विशेषेमध्यमाज्ञेयानयात्राशून्यशेषके ॥

अर्थ – तीर्थयात्राके प्रश्नमें याने कोई प्रश्न करे कि यात्रा होगी या नहीं ऐसे प्रश्नमें क्षेपक ३९ उनतालीस है अर्थात् पिंडांकमें ३९ जोडकर ३ तीनके भागसे शेष एक रहै तो यात्रा होगी ऐसा फल कहना दो ॥ ६८ ॥ २ शेष रहें तो मध्यम यात्रा कहना अर्थात् थोडी यात्रा होगी । शून्य शेष रहे ते तीर्थसंबन्धी यात्रा नहीं होगी ऐसी पृच्छकसे कहना ॥

अथ वर्षाप्रश्नः

द्वात्रिंशद्वर्षणप्रश्नेक्षेपकाः कथिताबुधैः ॥ ६९ ॥
वह्निभिर्विभजेद्धीमानेकशेषेप्रवर्षणम् ॥
द्वाभ्यांतुमध्यमावृष्टिरनावृष्टिः खशेषके ॥ ७० ॥

अर्थ – वर्षा होगी या नहीं ? ऐसा कोई प्रश्न करे तो ऐसे प्रश्नमें ३२ वत्तीस क्षेपक पंडितों न कहे हैं ॥ ६९ ॥ अर्थात् पिडांक– ३२ जोडकर बुद्धिमान् ३ तीनका भाग देवे १ एक शेष रहे तो वर्षा होगी ऐसा जाने । २ दो शेष रहें तो मध्यम वर्षा कहना । ० शून्य शेष रहे तो अनावृष्टि अर्थात् वर्षा न होगी ॥ ७० ॥

अथ गर्भोऽस्तिनवेतिप्रश्नः

गर्भप्रश्नेक्षेपकास्तुषड्विंशत्कथिताबुधैः ॥
पुरैर्भागंसमाहृत्यगर्भोभूशेषकेस्मृतः ॥ ७१ ॥
सन्देहस्तुद्विशेषेस्याच्छून्येनास्तीतिनिश्चयः ॥ ७२ ॥

अर्थ – कोई प्रश्न करे कि गर्भ है या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें २६ छब्बीस क्षेपक पंडितोंने कहा है । पिंडांकमें क्षेपकांक मिलाकर ३ तीनका भाग देवे १ एक शेष रहे तो गर्भ है ऐसा कहना ॥ ७१ ॥ दो २ शेष रहें तो संदेह है अर्थात् हो भी और न भी हो ऐसे जानना ॥ ३ तीन शेष रहें तो गर्भ नहीं है ऐसा कहना चाहिये ॥ ७२ ॥

अथ मूकप्रश्नः

पिंडांकं त्रिभिर्विभज्यैकेन जीवः ।
द्वाभ्यां धातुः । शून्येन मूलम् ॥ ७३ ॥

अर्थ – मूकप्रश्नके लिये पिंडांकमें तीन ३ से भाग देना १ एक शेष रहे तो जीव प्रश्न कहना । २ शेष रहें तो धातुसम्बन्धी प्रश्न कहना यदि तीन ३ शेष रहें तो मूलसंज्ञक प्रश्न कहना चाहिये ॥ ७३ ॥

जीवदृष्टे जीवाश्चतुर्विधाः । द्विपदचतुष्पदबहुपदापदादिभेदात् ॥ पिंडस्य चतुर्भागावशेषात् एकेन द्विपदः । द्वाभ्यांचतुष्पदः । त्रिभिर्बहुपदः । चतुर्भिरपदः ॥ तत्र द्विपदे त्रिविधो भेदः । पुरुषस्त्रीनपुंसकभेदात् । आलिंगितेन-पुरुषः । अभिधूमिते नारी । दग्धकेनषंढः । इतिजीवभेदः ॥ ७४ ॥

अर्थ – यदि जीवप्रश्न मालूम हो जाय तो जीव चार प्रकार के हैं उनके भेद द्विपद १, चतुष्पद २, बहुपद ३, और अपद ४, यह चार प्रकारके हैं, पिंडांकके चतुर्भागशेषसे अर्थात् पिंडांकमें चारका भाग देना १ एक शेष रहे तो द्विपद, २ दो शेष रहें तो चतुष्पद, ३ तीन शेष रहें तो बहुपद और शून्य ० शेष रहे तो अपद (पादरहित) जीवका प्रश्न कहना । तहां पुरुष स्त्री और नपुंसक प्रश्न भेदोंसे द्विपद तीन प्रकारके हैं उनका निर्णय इस प्रकार करना कि, आलिंगित प्रश्न हो तो पुरुष, अभिधूमित प्रश्न हो तो स्त्री प्रश्न कहना तथा दग्ध प्रश्न हो तो नपुंसक द्विपद जीव कहना यह जीव भेद हुआ ॥ ७४ ॥

अथ धातुज्ञानम्

धातवोद्विधा । धाम्या, अधाम्याश्च । तत्रद्वाभ्यां भागः । एकेनधाम्या द्वाभ्यामधाम्याः ॥ ७५ ॥

अर्थ – तहां धातुप्रश्न निश्चय होनेपर धातु धाम्य और अधाम्य भेदसे (जो धातु धौंकाई जाय वह धाम्य और जो अग्निमें न डाली) जाय वह अधाम्य कहाती है (दो प्रकारका है तहां प्रश्नपिंडांकमें २ दो का भाग देना १ एक शेष रहे तो धाम्य कहना और दो शेष रहें तो अधाम्य धातु कहना ॥ ७५ ॥

धाम्याअष्टविधाः सुवर्णरजतंताम्रकांस्यपित्तलरंगसीसलोहाख्याः । अत्राष्टाभिर्भागः । एकेनसुवर्णम् । द्वाभ्यांरजतम् । त्रिभिस्ताम्रम् । चतुर्भिः कांस्यम् । पंचभिः पित्तलम् । षड्भिः रंगः । सप्तभिः सीसकम् । अष्टभिर्लोहम् । तत्रापिभेदद्वयम् । घटितमघटितंच । तत्रद्वाभ्यांभागः । एकेनघटितम् । द्वाभ्यामघटितम् ॥ ७६ ॥

अर्थ – तहां सोना, चांदी, तांबा, कासीं, पीतल, रांगा, सीसा, लोहा इन भागोंसे धाम्य धातु आठ प्रकारकी है । तहां प्रश्नपिंडांकमें ८ आठ के भाग देकर शेषांकसे फल कहे । जैसे १ एक शेष रहे तो सोना कहना, दो २ शेषसे चाँदी कहना, ३ तीन शेषसे ताँबां, ४ चारसे कांसी, ५पांचसे पीतल, ६ छः से रांगा, ७ सातसे सीसा और ८ आठ शेषसे लोहा कहना । तहां धाम्य धातुमें भी दो भेद हैं अर्थात् घटित और अघटित (घटित और अघटितका यह तात्पर्य है कि जेवरादि बना हुआ घटित है और बिना बना हुआ अघटित) तहां पिंडांकमें दो का भाग देवे १ एक शेष रहे तो घटित धातु कहना दो २ शेषसे अघटित धातु कहना चाहिये । यह धातुभेद समाप्त हुआ ॥ ७६ ॥

अथ मूलनिर्णयः

मूलंचतुर्विधम् । वृक्षगुल्मवल्लीलताभेदात् । तत्र चतुर्भिर्विभज्यैकेन वृक्षः । द्वाभ्यां गुल्माः । त्रिभिर्वल्लीकूष्मांडशृङ्गाटकादयः । चतुर्भिर्लतातृणधान्यदूर्वागोधूमा इति । तत्रापिद्विविधाः भक्ष्यमभक्ष्यंच । तत्रपिंडांकेद्वाभ्यांभागेएकेनभक्ष्यम् । द्वाभ्यामभक्ष्यम् । तत्रापिद्विविधं सुगन्धिदुर्गन्धिभेदात् । प्रश्नपिंडांकेद्वाभ्यांभागेएकेनसुगन्धिः । द्वाभ्यांदुर्गन्धिः ॥ ७७ ॥

अर्थ – यदि प्रश्नसे निश्चय होगया हो कि मूलप्रश्न है तहां यह विचार करना कि मूलोंमें भी कौनसा मूल है इसका भेद कहते हैं कि वृक्ष १, गुल्म २, वल्ली ३ और लता ४ इन भेदोंसे मूल ४ चार प्रकारका है । तहां पिंडांकमें अर्थात् प्रश्नके पिंडमें ४ चारका भाग देना यदि १ शेष रहे तो कहना कि वृक्षका प्रश्न है, २ दो शेषसे गुल्मसंबन्धी प्रश्न कहना, ३ तीन शेषसे वल्ली, कुम्हड़ा सिंघाड़ा आदिके भेदका प्रश्न कहना और यदि ४ चार शेष रहें तो लता, तृण, धान्य, दूर्वा, गेहूं, प्रश्न कहना । तहां इन चार भेदोंमें भी प्रत्येक भक्ष्य और अभक्ष्य दो प्रकारके हैं अर्थात् यह वृक्ष, गुल्म, वल्ली, लता आदि भोजन करनेयोग्य हैं या नहीं ? यह विचार करना तहां पिंडांकमें २ दो से भाग देना यदि १ एक शेष रहे तो कहना कि भोजनयोग्य है और २ दो शेष रहें तो कहना कि यह वृक्षादि भोजन करने योग्य नहीं है । तहां भी दुर्गन्धित और सुगंधित इस भेदसे दो प्रकारके हैं

अर्थात् यह वृक्षादि सुगन्धिवाले या दुर्गन्धिवाले हैं ऐसा विचार करना तहां पिंडांकमें दो २ का भाग देना १ एक शेष रहे तो सुगन्धिवाले कहना और २ दो शेष रहें तो कहना कि दुर्गन्धिवाले हैं। यह मूलका भेद हुआ। बुद्धिमान्को चाहिये कि बहुत सावधानीसे चित्तको स्थिर करके प्रश्नके इन सब भेदोंको विचार कर युक्तिसे पृच्छकका प्रश्न कहे ॥ ७७ ॥

अथांगस्पर्शेन मूलज्ञानम्

०८०६९

शिरःस्पर्शेनवृक्षः। उदरस्पर्शेनगुल्माः। बाहुस्पर्शेनलता। पृष्ठेनवल्ली पादेनकंदः ॥ ७८ ॥

अर्थ – प्रश्नकर्ता शिरको स्पर्श करके प्रश्न करे तो वृक्ष कहना, उदरको स्पर्श करके प्रश्न करे तो गुल्म कहना, बाहुको स्पर्श करके प्रश्न करे तो लता कहना, पीठको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो वल्ली कहना। (वल्ली आदिका भेद पीछे कह आये हैं)। पैरको स्पर्श करके प्रश्न करे तो कन्द कहना चाहिये अर्थात् सकरकन्द, जिमीकन्द आदि कहना ॥ ७८ ॥

अथ नष्टवस्तुज्ञानम्

२०६०८

दैवज्ञेन खं निरीक्षमाणे दूते पृच्छति सति नष्टवस्तु खे कथनीयम्। अधोनिरीक्षमाणेऽधो वक्तव्यम्। कोणे प्रविश्य पृच्छति कोणे वक्तव्यम्। यस्यां दिशि प्रविश्य यत्रावलोकयेत् तत्रैव वक्तव्यम्। यत्रादिने पृच्छतितदह्नि नष्टं वाच्यम् ॥ ७९ ॥

अर्थ – यदि पृच्छक ऐसा प्रश्न करे कि खोई हुई वस्तु कहां और किस दिशाआदिमें गई है ऐसे प्रश्नमें ज्योतिषीको चाहिये कि देखे कि प्रष्टा किस दिशा आदिमें दृष्टि करके प्रश्न करता है यदि आकाशकी ओर दृष्टि करके प्रश्न करे तो आकाशमें अर्थात् ऊपर छत्तआदिपर वस्तु है ऐसा कहना चाहिये। अधोदृष्टि अर्थात् पृथ्वीकी ओर मुख करके पूछे तो पृथ्वीमें वस्तु कहना चाहिये कोणमें बैठकर पूछे तो कोणमें वस्तु कहना। जिस दिशामें बैठकर देखकर प्रश्न करे उसी दिशामें वस्तु कहना। जिस दिन प्रश्न करे उसी दिन वस्तु नष्ट हुई (या प्राप्त होगी) ऐसा कहना चाहिये ॥ ७९ ॥

नष्टवस्तु दिशज्ञान प्रकार प्रदर्शित -२०६०

प्रश्नध्रुवांके द्वादशभिर्भागो दातव्यस्तदनंतरं शेषांका मेषादिराशयो ज्ञातव्याः। मेषेग्रामम्, वृषे क्षेत्रम्, मिथुने चतुष्पथम्, कर्केरसातलम्, सिंहेऽन्तरिक्षम्, कन्यायां शून्यागारम्, तुले पथि, वृश्चिके गृहम्, धनुषि ग्रामः, मकरेऽन्तरिक्षम्, कुंभे तडागम्, मीने नदीतीरं गंगायांवा इति ॥ ८० ॥

अर्थ – प्रश्नध्रुवांकमें अर्थात् पिंडांकमें १२ बारहसे भाग देवे, शेषांकसे मेषादि राशि जाने जैसे १ शेष रहे तो मेष, २ दोसे वृष इसी प्रकार जानना। यदि एक शेष रहे अर्थात् मेष राशिसे ग्राममें वस्तु कहना, २ वृषसे खेतमें, ३ मिथुनसे चौमुहानेमें, ४ कर्कसे पृथ्वीके नीचे अर्थात् पृथ्वीमें गडा हुआ, ५ सिंहसे अन्तरिक्ष अर्थात् आकाशमें, ६ कन्यासे शून्यस्थलमें, ७ तुलासे रास्तामें, ८ वृश्चिकसे गृहमें, ९ धनुसे ग्राममें, १० मकरसे अन्तरिक्षमें, ११ कुंभसे तडाग (तलाब) में, १२ मीनसे नदीके किनारे वा गंगाके किनारे पर वस्तु कहना। इस प्रकारसे नष्टवस्तु विचार करके ज्योतिषीको बताना चाहिये ॥ ८० ॥

अथ चिन्ताप्रश्नः

प्रश्नाक्षरध्रुवांकेद्वादशभिर्भागः शेषांकेराशयो ज्ञातव्याः । मेषे द्विपदम्, वृषे चतुष्पदम्, मिथुनेयुग्मम्, कर्के व्यापारः, सिंहे राजचिन्ता, कन्यायां विवाहचिन्ता, तुलायां धातुः, वृश्चिके रोगः, धनुषि लाभः, मकरे कलहः, कुंभे गर्भः, मीने स्थानचिन्ता । इतिचिन्ताप्रश्नः ।। ८१ ।।

अर्थ – प्रश्नके पिंडांकमें १२ बारहका भाग देकर शेषांकसे मेषादि राशि जानना । अर्थात् १ एकसे मेष, २ से वृष इसी प्रकारसे अन्य भी जानना । १ मेषसे द्विपदचिन्ता, २ वृषसे पशुआदि चतुष्पद जीवोंकी चिन्ता, ३ मिथुनसे युग्म अर्थात् जोडेकी चिन्ता, ४ कर्कसे रोजगारकी चिन्ता, ५ सिंहसे राजसंबन्धी चिन्ता और ६ कन्यासे विवाहकी चिन्ता, ७ तुलासे धातु (द्रव्य) की चिन्ता, ८ वृश्चिकसे रोगचिन्ता, ९ धनसे द्रव्यादिकोंके लाभकी चिन्ता, १० मकरसे कलह (लडाई) की चिन्ता, ११ कुंभसे गर्भकी चिन्ता, १२ मीनसे स्थान (गृहादि) की चिन्ता कहना अर्थात् प्रश्नकर्ता के मनमें इन सब वस्तुओंकी चिन्ता कहना चाहिये । यह चिन्ताप्रश्न समाप्त हुआ ।। ८१ ।।

अथ कार्यावधिप्रश्नः ।

आलिंगिते दिनं प्रोक्तं मासः स्यादभिधूमिते ।।
दग्धे च वत्सरं प्रोक्तं मूलदेवेन भाषितम् ।। ८२ ।।

अर्थ – कोई आकर प्रश्न करे कि हमारा कार्य कबतक होगा तो ऐसे प्रश्नमें देखना कि यदि आलिंगिति प्रश्न हो तो १ दिन कहा है, अभिधूमित प्रश्नमें १ मास कहा है, दग्ध प्रश्नमें १ वर्ष संख्या मूलदेवने कही है ।। ८२ ।।

तथा च ।

तिथिवारर्क्षयोगस्तुत्रिघ्नः षड्भिर्युतस्तथा ।।
नवभिस्तुहरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ।। ८३ ।।
एकेन पक्षो द्वितयेन मास ऋतुस्त्रिभिः स्यादयनं चतुर्भिः ।। दिवाचरात्रावपि यामसंख्यैर्घटीपलाद्यानि निवेदितानि ।। ८४ ।।

अर्थ – जिस समय कोई प्रश्न करे कि हमारा कार्य कबतक होगा ? ऐसे प्रश्नमें तिथि संख्याको और वारसंख्याको और नक्षत्र संख्याको एकत्र कर अर्थात् प्रतिपदादि तिथि रव्यादि बार तथा अश्विन्यादिनक्षत्रोंका योग करके फिर ३ तीनसे गुणा करे और ६ छः और मिलादे फिर ९ नवसे भाग देकर शेष रहे अंकसे उक्त फल कहे ।। ८३ ।। यदि १ एक शेष रहे तो पक्ष कहना, २ दो शेष रहें तो मास कहना, ३ तीन शेष रहें तो ऋतु कहना, ४ चार शेष रहें तो अयन अर्थात् ६ मास कहना, ५ पांच शेष रहें तो दिन कहना, ६ शेष रहे तो रात्रि कहना, ७ सात शेष रहें तो प्रहर कहना, ८ आठ शेष रहें तो घटी कहना, ९ नव शेष रहें तो पल कहना चाहिये इस प्रकारसे कार्य्यावधिप्रश्न कहा है ।। ८४ ।।

अथ सुभिक्षदुर्भिक्षप्रश्नः

प्रश्नपिंडांके त्रिभिर्भागः । एकेन समर्धम्, द्वाभ्यां समता, शून्येन महर्घम् ।। ८५ ।।

अर्थ – प्रश्नके पिंडांकमें ३ तीनसे भाग देना १ एक शेष रहे तो समर्घ (सुभिक्ष) कहना, २ दो शेषसे समता (न सुभिक्ष न दुर्भिक्ष) कहना, ० शून्य शेषसे महर्घ (दुर्भिक्ष) कहना ।। ८५ ।।

अथ जयसन्धिपराजयप्रश्नः

आलिंगितेन जयः, अभिधूमितेन सन्धिः, दग्धेन भंगः ।। ८६ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि राजद्वारसे या युद्धसे हमारा जय होगा या पराजय ? ऐसे प्रश्नमें आलिंगित प्रश्नका चिह्न मिलता हो तो पूछनेवालेका जय कहना, अभिधूमित प्रश्नका चिह्न हो तो आपसमें मेल हो जाय, दग्ध प्रश्नका चिह्न मिलता हो तो प्रश्नकर्ताका भंग अर्थात् नाश या पराजय कहना ।। ८६ ।।

पिंडांके त्रिभिर्भागः । एकेन जयः । द्वाभ्यां संधिः । शून्येन भंगः ।। ८७ ।।

अर्थ – पिंडांकमें तीनसे भाग देना १ शेष रहे तो जय कहना, २ दो शेष रहें तो आपसमें मेल कहना, ० शून्य शेष रहें तो भंग (पराजय) कहना ।। ८७ ।।

अथ च

दक्षिणे पृच्छति जयः, वामे पराजयः, सन्मुखे
सन्धिः, पृष्ठे मरणम्, इति भणितं मूलदेवेन ।। ८८ ।।

अर्थ – प्रश्न करनेवाला मनुष्य दक्षिण भागमें स्थित होकर पूछे तो जय कहना, वाम भाग में स्थित होकर पूछे तो पराजय कहना, चाहिये ऐसा मूलदेवने कहा है ।। ८८ ।।

इदानीं सत्यासत्यं वक्ष्ये

पिंडांके द्वाभ्यां भागः, एकेन सत्यं, द्वाभ्यामसत्यम् ।। ८९ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि अमुक वार्ता सत्य है या असत्य है ? ऐसे प्रश्नमें पिंडांकमें २ दोसे भाग देना १ एक शेष रहे तो प्रश्न सत्य कहना, २ दो शेष रहें तो यह वार्ता असत्य है अथवा यह प्रश्न असत्य है ऐसा कहना ।। ८९ ।।

अथ पुंस्त्रीप्रश्नः

प्रश्नवर्णांकमात्रांकस्तिथिवारर्क्षसंयुतः ।।
सप्तभक्तावशेषेणसमेस्त्रीविषमेपुमान् ।। ९० ।।

अर्थ – जिस समय कोई प्रश्न करे तो विचार करना कि यह प्रश्न पुरुषसंबन्धी है या स्त्रीसंबन्धी है ? इसके लिये प्रश्नाक्षरके वर्णांक और मात्रांकको जोडकर उसमें वर्तमान तिथि, बार और नक्षत्रको भी जोड देना फिर ७ सातसे भाग देना यदि सम अंक अर्थात् २ । ४ । या ६ शेष रहें तो स्त्रीसंबन्धी प्रश्न कहना और विषम अंक अर्थात् १ । ३ । ५ । ० शेष रहें तो पुरुषसंबन्धी प्रश्न कहना ।। ९० ।।

अथास्यां गर्भोऽस्तिनवेतिप्रश्नः

वारस्त्रिगुणितः कार्यस्तिथिभिश्चैवसंयुतः ।।
द्वाभ्यांभक्तेचयच्छेषंविषमेऽस्तिसमेनहि ।। ९१ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि इस स्त्रीको गर्भ है या नहीं ? तब वर्तमान वारको ३ त्रिगुणा करे उसमें वर्तमान तिथि जोड देवे और दो २ से भाग दे दें यदि (एक) शेष रहे तो कहना कि गर्भ है और सम (दो) शेष रहें तो गर्भ नहीं है ऐसा ज्योतिषीको कहना चाहिये ।। ९१ ।।

अथ पुत्रकन्याजन्मेतिप्रश्नः ।

तिथिवारर्क्षयोगानांयोगोनामाक्षरैर्युतः ॥
सप्तभक्ताऽवशेषेणसमेकन्याऽसमेसुतः ॥ ९२ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि कन्या होगी या पुत्र ? ऐसे प्रश्नमें प्रश्न समयके तिथि वार, नक्षत्र और योगको जोड कर उसमें नामकी अक्षरसंज्ञाको भी जोड देना फिर ७ सातसे भाग देना यदि सम (२ । ४ । ६) अंक शेष रहें तो कन्या जन्मेगी ऐसा कहना और विषम (१ । ३ । ५ । ७) अंक शेष रहें तो पुत्रका जन्म होगा ऐसा कहना ॥ ९२ ॥

तथा च

प्रश्नपिंडांकेत्रिभिर्भागः । एकेनपुत्रः, द्वाभ्यां कन्या, शून्ये नास्तिगर्भः ॥९३॥

अर्थ – अथवा प्रश्नके पिंडांकमें ३ तीनसे भाग लेना १ एक शेष रहे तो पुत्रका जन्म कहना २ दो शेषसे कन्याका जन्म कहना, शून्य शेषसे कहना कि गर्भ नहीं है ॥ ९३ ॥

तथा च

ओष्ठ-कंठ-ग्रीवा-ललाट-कर्ण-शीर्ष-नखान् स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा पुत्रजन्म, नाभिहस्तपादस्तनान् स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा कन्याजन्म इति ॥ ९४ ॥

अर्थ – ओठ, कंठ, ग्रीवा, मस्तक, कान, शिर, अथवा नखोंको स्पर्श करके प्रश्न करे तो पुत्रका जन्म कहना । यदि नाभि, हाथ, पाँव और स्तनको स्पर्श करके प्रश्न करे तो कन्याका जन्म कहना चाहियें ॥ ९४ ॥

अथायं गर्भः ममान्यस्य वेतिप्रश्नः

योगःपंचगुणः कार्योवारेणविनियोजयेत् ।
रामैर्भक्तेतुयच्छेषमेकस्तुस्वतनूद्भवः ॥ ९५ ॥
द्वाभ्यामन्याद्विजानीयात्रिशेषेवीर्ययोजनः ॥ ९६ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि यह गर्भ हमारा है या दूसरेका ? तो प्रश्न समयमें जो विष्कुम्भादि योगमेंसे हो उसको ५ पांचसे गुणा करके उसमें वर्तमान वार जोड देवे फिर ३ तीनसे भाग देवे यदि १ शेष रहे तो कहना कि अपने ही वीर्यसे गर्भ रहा है । २ दो शेष रहें तो दूसरेके वीर्यसे गर्भ है और यदि ० शून्य शेष रहे तो भी अपने वीर्यसे गर्भ है ऐसा कहना ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

अथ विवाहप्रश्नः

प्रश्नपिंडांके अष्टभिर्भागः, एकेनाऽनायासेन विवाहः, द्वाभ्यां कष्टेन विवाहः, त्रिभिर्नास्ति, चतुर्भिःकन्यामरणम्, पंचभिः पितृव्यादिमरणं वा देशान्तरेगमनं वृथागमनं वा, षड्भिःनृपाद्भीतिः, सप्तभिर्द्वयोर्मरणं वा श्वशुरमरणम्, अष्टभिः सन्ततिमरणम्, इति विवाहचिंता ॥ ९७ ॥

अर्थ – कोई प्रश्न करे कि हमारा या अन्य किसीका विवाह होगा या नहीं ? और होगा तो बहुत परिश्रमसे होगा या थोडे ? ऐसे पूछने पर प्रश्नके पिंडांकमें ८ आठसे भाग देवे यदि १ शेष रहे तो कहना कि अनायासही विवाह हो जायगा परिश्रम नहीं करना पड़ेगा, २ दो शेषसे

कष्टसे कहना, ३ तीन शेष रहे तो विवाह न होगा, ४ चार शेष रहें तो कहना कि कन्या मर जायगी, ५ पांच शेष रहें तो पितृव्यादिका मरण होगा या परदेश गमन होगा अथवा मृषागमन होगा, ६ छः शेष रहें तो राजासे भय प्राप्त होगी ७ सात शेष रहें तो कन्या और वर दोनोंका मरण होगा अथवा श्वशुरका मरण होगा, ८ शेष रहें तो सन्तानकी मृत्यु कहना चाहिये। यह विवाह प्रश्नका भेद वर्णन किया ।। ९७ ।।

इदानीमायुर्वक्ष्ये

अक्षरपिंडं द्विगुणितं मात्रापिंडं चतुर्गुणितं तत्र समुदायेत्रिभिर्भागः । एकेन जीवनम्, द्वाभ्यां पीडा, शून्येन मरणम्, आलिंगिते दिनम् अभिधूमिते मासः, दग्धे वत्सरः ।। ९८ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि अमुक रोगी जीवेगा या मरेगा ? तो उसके प्रश्नाक्षरके वर्णोंके ध्रुवांकोंको दूना करे और मात्राओंको चारसे गुणे फिर दोनोंका योग करके उसमें तीनसे भाग देवे यदि १ एक शेष रहे तो कहना कि जीवेगा, २ दो शेष रहें तो कहना कि अत्यन्त कष्ट होगा, ० शून्य शेष रहें तो कहना कि मर जावेगा। अब अवधि कहते हैं । आलिंगित प्रश्न हो तो १ दिन कहना, अभिधूमित प्रश्न हो तो १ मास कहना, दग्ध प्रश्नका लक्षण मिलता हो तो, वर्ष कहना चाहिये ।। ९८ ।।

अथाश्वगजोष्ट्रादिप्राप्तिप्रश्नः

स्ववर्णास्त्रिगुणाः कार्यावस्तुवर्णैक्यरूपयुक् ।।
द्विहृतंशेषजंब्रूयात्समेलाभोऽन्यथानहि ।। ९९ ।।

अर्थ – यदि कोई पूछे कि हमारे घोडा, हाथी, ऊंट आदि पशु होंगे या नहीं अथवा इनसे लाभ है या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें प्रश्नाक्षर ध्रुवांकको ३ तिगुना करे और उसमें वस्तुके वर्णांकको जोडकर १ एक और जोडदे फिर २ दो से भाग दे यदि सम शेष रहे तो लाभ होगा और यदि १ एक शेष रहे तो उससे लाभ नहीं है ऐसा कहना ।। ९९ ।।

अथामुकाद्द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति नवेतिप्रश्नः

प्रभोर्नामगुणैर्हन्यात्स्ववर्णैर्मिश्रितंहरेत् ।।
रामैः प्राप्तिर्विजानीयादेकशेषेद्विकेर्नहि ।।
त्रिशेषेचिरकालेनद्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति ।। १०० ।।

अर्थ – यदि कोई पूछे कि हमको इनसे लाभ होगा या नहीं ? ऐसे प्रश्न में दाताके नामाक्षरोंको ३ तीनसे गुणा करे फिर प्रश्नकर्ताके नामके अक्षरोंको उसीमें जोडकर ३ तीनसे भाग देवे यदि १ एक शेष रहे तो कहना कि प्राप्ति होगी, २ दो शेष रहे तो प्राप्ति नहीं होगी ऐसा कहना और यदि ० शून्य शेष रहे तो भी कहना कि प्राप्ति होगी परन्तु बहुत कालमें होगी ऐसा कहना चाहिये ।। १०० ।।

अथ कियद्द्रव्यप्राप्तिरितिप्रश्नः

तन्नामवर्णसंख्यायाहतानन्दैर्युताःशरैः ।।
सप्तभिस्तुहरेद्भागंशेषांकेदशकाः स्मृताः ।।१०१।।

लब्धंपंचगुणंकार्यंदशकेभ्योविशोधयेत् ।।
तच्चप्राप्तिंविजानीयात्कुलमानानुसारतः ।।१०२।।

अर्थ – "तन्नाम" प्रश्नकर्ताके नामके जितने अक्षर हों उनको ९ नवसे गुणदे उसमें पांच जोडकर फिर ७ सातसे भाग देवे जो अंक शेष रहे उसकी दशक संज्ञा होती है ।। १०१ ।। लब्ध अंकको ५ पांचसे गुणा करे जो गुणन फल हो उसमेंसे दशकको घटाय देवे दशकके घटानेसे जो अंक शेष रहे उसी अंकके समान लाभ कहना तहां उस अंकके तुल्य सैंकडा या हजार या लाख क्या मिलेगा इसके विचारके लिये देश, जाति, कुल, हैसियत, रोजगार आदिको विचारकर कहना चाहिये ।। १०२ ।।

अथ दूतश्चलितो नवेति प्रश्नः

तिथिस्त्रिगुणिताकार्या पंचयुग्वारमिश्रिता ।।
सप्तभिर्गुणिता द्वाभ्यां शेषे तत्रफलं वदेत् ।।
एकेन चलितो दूतः शून्यशेषे तु निश्चलः ।। १०३ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करै कि दूत अथवा अमुक मनुष्य चला है या नहीं ? जिस दिन प्रश्न किया जाय उस दिनकी तिथिको ३ तिगुनी करे और उसमें ५ पांच और जोडकर वर्तमान वारको भी जोडदे फिर ७ सातसे गुणदे २ दो से भाग देकर शेष अंकसें फल कहना, जैसे १ एक शेष रहे तो कहना कि दूत चला है, २ दो शेष रहें तो कहना कि अभी नहीं चला है अर्थात् स्थित है।।१०३।।

अथ पांथप्रश्नः

तिथिवारौतथालग्नंनामाक्षरसमन्वितम् ।।
नक्षत्रकरणंचैवसप्तभिर्भागमाहरेत् ।।१०४।।
एकेनतत्रवासश्च द्वाभ्यांचगमनंभवेत् ।।
तृतीयेचार्द्धमार्गेतुचतुर्थेग्रामसन्निधौ ।।१०५।।
पंचमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधिसमाकुलः ।।
सप्तमेशून्यकार्यःस्यात्प्रश्नश्चकथितोबुधैः ।।१०६।।

अर्थ – यदि कोई पूछे कि परदेशी आता है या नहीं अथवा सुखसे है या दुःखसे ? इत्यादि प्रश्न करे तो उस दिनकी तिथि, वार और उस समयकी लग्न, तथा नामके अक्षर, वर्तमान नक्षत्र, करण, सबको जोडकर सातसे भाग देवे ।। १०४ ।। यदि १ एक शेष रहे तो कहना कि वहीं स्थित है, २ दो शेष रहें तो वहांसे चल दिया है, ३ तीन शेष रहें तो आधे मार्गमें आया है, ४ चार शेष रहें तो कहना कि ग्रामके समीप आ गया है ।। १०५ ।। ५ पांच शेष रहें तो कहना कि पीछे लौटा जाता है, ६ छः शेष रहें तो रोगसे पीडित है, ७ सात शेष रहें तो कहना कि शून्य कार्य है अर्थात् रोजगार आदि लगा नहीं है इस प्रकारसे यह प्रश्न पंडितोंने कहा है ।। १०६ ।।

अथामुकस्यमेलनंभविष्यतिनवेतिप्रश्नः

घटिकास्त्रिगुणाःसंकाःसप्तभिःसंयुताः पुनः ।।
वेदैश्चभाजितास्तत्रशेषांकेफलमादिशेत् ।।१०७।।

एकशेषेमेलनंचद्वाभ्यांचगमनान्तरे ॥
त्रिशेषेदर्शनाभावः समुद्रंःक्लेशकृद्भवेत् ॥१०८॥

अर्थ – कोई प्रश्न करे कि अमुकसे मिलना होगा या न होगा ? ऐसे प्रश्नमें जिस समय प्रश्न किया हो उस समयका इष्टकाल बनाकर उसको ३ तीनसे गुण दे और उसमें १ एक मिलाकर ७ सात भी मिला देवे फिर ४ चारसे भाग देवे शेष अंकसे उक्त फल कहे ॥ १०७ ॥ १ शेष रहे तो कहना कि मिलना होगा दो शेष रहें तो गमनान्तर अर्थात् दूसरी बार जानेसे मिलना होगा, ३ तीन शेष रहें तो कहना कि दर्शनाभव अर्थात् मुलाकात न होगी, और ४ चार शेषसे कहना कि वह जीव क्लेशसे मिलेगा ॥ १०८ ॥

अथ मित्रस्यतथाचौरादिकस्यमेलनभविष्यतिनवेतिप्रश्नः

तिथिवारर्क्षयोगानांयोगोद्विघ्नस्त्रिभिर्युतः ॥
ततोद्वादशभिर्भाज्यःशेषेणफलमादिशेत् ॥१०९॥

अर्थ – कोई पूछे कि मित्र तथा चौरआदि कहां हैं और क्या करते हैं, मिलेंगे या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें प्रश्नसमयकी तिथि, वार, नक्षत्र और योगोंको जोड करके उसको दूना करदे और ३ तीन उसमें और भी जोडदे फिर १२ बारहका भाग देवे जो शेष रहे उससे फल कहे ॥ १०९ ॥

हास्ययुक्तःस्थितोभूम्यांस्वस्थासनयुतोजनैः ॥
तांबूलाद्युपचारैश्चह्येकशेषेफलंवदेत् ॥११०॥

अर्थ – यदि १ एक शेष रहे तो प्रश्नकर्तासे कहना कि वह जीव हास्ययुक्त अपने आसनपर अपने जनों करके युक्त पान आदि उपचारों सहित पृथ्वीपर बैठा है ऐसा कहना ॥ ११० ॥

व्यायामेनयुतश्चापिस्वल्पमानवमिश्रितः ॥
उद्वेगवार्ताश्रवणंद्विशेषेदर्शनंकलम् ॥१११॥

अर्थ – यदि २ दो शेष रहें तो कहना कि वह जीव कसरत करता है थोडे मनुष्यों करके युक्त है, कुछ उद्वेगकी वार्ता सुन रहा है अर्थात् कुछ भयकी वार्ता सुन रहा है ऐसा फल कहना ॥ १११ ॥

कुपितःस्वासनस्थोपिताडनंबुद्धिसंभवम् ॥
पश्चात्कार्यप्रसंगेन गमनं च त्रिशेषके ॥११२॥

अर्थ – यदि ३ तीन शेष रहें तो कहना कि क्रोधयुक्त होकर अपने आसनपर स्थित है बुद्धिसे ताडित है फिर पीछें कार्यके प्रसंगसे जाना कहना अर्थात् कहीं चला गया है ॥ ११२ ॥

वेदशेषेतुसुप्तःस्याज्जलेनमुखशुद्धिकृत् ॥
पंचशेषेतुसुप्तःसन्नुत्थितो भोजनं भवेत् ॥११३॥

अर्थ – यदि ४ चार शेष रहें तो कहना कि सोता हुआ है, जलसे मुखको धो रहा है, ५ पांच शेष रहें तो कहना कि सोतेसे उठकर भोजन करता है ॥ ११३ ॥

रसशेषेमार्गमध्येदर्शनंनिश्चितंभवेत् ॥
स्त्रीभोगव्यवहारंचसप्तशेषेविनिर्दिशेत् ॥११४॥

अर्थ – यदि ६ छः शेष रहें तो कहना कि रास्ता, चलते अवश्य मिलना होवे, यदि ७ सात शेष रहें तो कहना कि स्त्रीके संभोगादि व्यवहारोंमें लग रहा है ॥ ११४ ॥

अष्टशेषेयदावाच्यंचित्तोद्वेगस्तदाभवेत् ।।

नन्दशेषेयदादृष्टोधर्मकार्येषुतत्परः ।। ११५ ।।

अर्थ – यदि आठ ८ शेष रहें तो कहना कि उसके मनमें बहुत उद्वेग पैदा हो रहा है। यदि ९ नव शेष रहें तो कहना कि वह जीव धर्मके कार्यमें तत्पर हो रहा है ।। ११५ ।।

दशमेराजसम्मानं रुद्रे भोजनमेव च ।।

द्वादशे दुःखितोह्याढ्यः स्त्रीभोगंकर्तुमिच्छति ।। ११६ ।।

अर्थ – यदि १० दश शेष रहें तो कहना कि राजाके सम्मानसे युक्त है, ११ ग्यारह शेष रहें तो कहना कि भोजन कर रहा है, १२ बारह शेष रहें तो कहना कि वह जीव दुःखयुक्त है, धनी है, स्त्रीके भोगकी इच्छा कर रहा है ।। ११६ ।।

इदानीं नष्टजातकं वक्ष्ये

वर्णध्रुवाद्विगुणितामात्राणांपूर्ववद् ध्रुवाः ।।

ऐक्यंकालविचारोयंमूलदेवेन भाषितम् ।। ११७ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि हमारा जन्मपत्र नहीं है हम चाहते हैं कि बन जाय? ऐसे प्रश्नमें जोतिषीको चाहिये कि प्रश्नाक्षरके वर्णध्रुवा को द्विगुणित करे अर्थात् दो से गुणा करे और मात्राओंकी ध्रुवा जो आई है उसे वैसीही रहने देवे फिर दोनोंको एक कर लेवे इस तरहसे कालका विचार है, इसको मूलदेवने कहा है ।। ११७ ।।

तत्रध्रुवांकसमुदाये १०८ भागः शेषेण वर्षः तत्रैवाक्षरपिंडेद्वाभ्यांभागः एकेन शुक्लपक्षः द्विशेषके कृष्णपक्षः ।। ११८ ।।

अर्थ — तहां ध्रुवांकके समुदायमें १०८ एक सौ आठका भाग देवे जो शेष रहे वह वर्ष होता है, फिर उसी प्रश्न ध्रुवांकमें २ दोसे भाग देवे यदि १ एक शेष रहे तो कहना कि शुक्ल पक्षका जन्म है और २ दो शेष रहें तो कहना कि कृष्णपक्षका जन्म है ।। ११८ ।।

तत्रैवाक्षरपिंडेसप्तविंशतिभागः एकशेषेऽश्विनी, द्विशेषेभरणी, त्रिशेषेकृत्तिका दीत्येवंनक्षत्राणि ज्ञातव्यानि ।। ११९ ।।

अर्थ – तहां फिर प्रश्नाक्षर ध्रुवांकपिंडमें २७ सत्ताईसका भाग देवे यदि १ एक शेष रहे तो अश्विनी, २ दोसे भरणी, तीनसे कृत्तिका इसी प्रकार रोहिणी आदि नक्षत्र जानना चाहिये।। ११९ ।।

तत्रैवाक्षरपिंडेत्रिंशद्भागेनशेषमंशाः ।। १२० ।।

अर्थ – तहां फिर अक्षरपिंडमें ३० तीससे भाग देवे जो शेष रहे उससे अंश जाने जैसे १ एक शेष रहे तो कहना कि एक अंश है २ दोसे दो अंश इसी प्रकार कहना चाहिये ।। १२० ।।

तत्रैवपिंडेद्वादशभागशेषेणएकेन फाल्गुनः,

द्वाभ्यांचैत्रः, त्रिभिर्वैशाखः, चतुर्भिर्ज्येष्ठः,

पंचभिराषाढः, एवंश्रावणादिवोध्यम् ।। १२१ ।।

अर्थ – तहां फिर पिंडमें १२ बारहका भाग देवे शेषसे मास कहे यदि १ एक शेष रहे तो कहना कि फाल्गुनका जन्म है २ दोसे चैत्रका जन्म कहना, तीनसे वैशाखका जन्म कहना, ४ चारसे

ज्येष्ठका जन्म कहना, पांचसे आषाढका जन्म कहना चाहिये, ६ से श्रावण मासका जन्म कहना इसी प्रकार शेषांकोंसे और भी शेष मास कहने चाहिये ।। १२१ ।।

एवंतत्रैवाक्षरपिंडे द्वादशभागा एकेन मेषः, द्वाभ्यां वृषः, त्रिभिमिथुनमित्यादि-
क्रमेण लग्नानि ज्ञातव्यानि । इतिनष्टजन्मपत्रप्रकारः ।। १२२ ।।

अर्थ – इसी प्रकार तहां फिर भी अक्षरपिंडमें १२ बारहका भाग देवे यदि १ एक शेष रहे तो मेष लग्न कहना चाहिये, २ दोसे वृष, तीनसे मिथुन, चारसे कर्क तथा इसी प्रकार सिंहादि लग्न भी जानना चाहिये ।। १२२ ।।

अथ सिद्ध्यसिद्धिः

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं वारसंख्यासमन्वितम् ।।
पञ्चभिर्गुणितं तच्च पिंडं मुनिभिराभजेत् ।। १२३ ।।
एकत्रिशेषे विलम्ब्यात्कार्यसिद्धिर्द्विवेदयोः ।।
तत्क्षणात्पञ्चभिः षड्भिः कार्यनाशस्तु सप्तभिः ।। १२४ ।।

अर्थ – यदि प्रश्नकर्ता पूछे कि हमारा कार्य सिद्ध होगा या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें पूर्वोक्त रीतिसे फलादिकोंके नाम उच्चारणसे जितने अक्षर आये हैं उनको दूना करे फिर उस द्विगुणित अंकमें वर्तमान (जो उस दिन हो उस) बारको जोड देना । वारके जोडनेसे जितनी संख्या हो उस अंकको ५ पांचसे गुण देना फिर उस पंचगुणित अंकसंख्यामें ७ सातसे भाग लेना यदि भागावशेष अंक एक या तीन हो तो कहना कि विलंबसे कार्यकी सिद्धि होगी, तथा २ या ४ हो तो थोडे विलम्बसे तथा ५ या ६ हो तो तत्क्षण कार्य सिद्धि कहना तथा ७ सात शेष हो तो कार्यका नाश होगा अर्थात् कार्य नहीं होगा ।। १२३ ।। १२४ ।।

इति श्रीकाशीप्रान्तीयतेलारीग्रामनिवासिविद्वद्वररघुनंदनशर्मात्म-
जशालग्रामज्योतिर्विद्विरचितकेरलतत्त्वप्रश्नसंग्रहहिन्दी-टीकायां पूर्वार्द्धं समाप्तम् ।

अथोत्तरार्द्धम्

तत्र ध्वजाद्यायप्रश्नाः

भूतादिविविधान्प्रश्नान्कथयिष्यामि संग्रहे ।।
आयप्रश्नाख्यग्रन्थं च चमत्कृतिकरं परम् ।। १ ।।

अर्थ – इस संग्रह ग्रंथमें भूत, भविष्य, वर्तमान नाना प्रकारके प्रश्न कहेंगे यह आयप्रश्न ग्रंथ बडा चमत्कार करनेवाला है ।। १ ।।

उच्चारितफलनाम्नो वर्णक्रमतोध्वजादयोष्टायाः ।।
प्रश्नाक्षरतो वापि कल्पनीया दैवविदा नित्यम् ।। २ ।।

अर्थ – उच्चारित अर्थात् कहे हुए फलादिकोंके नामसे वर्णके क्रमसे ध्वज आदि ८ आठ आय होते हैं जैसे बोले हुए फलादिके नाम जो कवर्गादि प्रथम अक्षरका उच्चारण हो उससे अष्ट आय जानना चाहिये अथवा प्रश्नके अक्षरसे ध्वजादि अष्ट आय दैवज्ञको नित्यही कल्पना करना चाहिये ।। २ ।।

अथवा

उच्चारितफलादीनामाद्यक्षरवशात्फलम् ।।
ज्ञात्वाऽकारादिवर्गाच्च ध्वजादय इति क्रमात् ।। ३ ।।

अर्थ–उच्चारण किये हुए फल आदिके प्रथम अक्षरसे अकार आदि वर्गोंको जानकर क्रमसे ध्वजादि आठ आय जानै जैसे अकारादि वर्ण–अ, क, च, ट, त, प, य, श, ये हैं इनसे फल कहना।

अथाऽऽयनामानि

ध्वजो धूम्रश्च सिंहश्च श्वानो वृषखरौ गजः ।।
ध्वांक्षश्चायाष्टकं ज्ञेयं शुभाशुभफलं क्रमात् ।। ४ ।।

अर्थ – अब ध्वजादिकोंके नाम कहते हैं जैसे ध्वज १, धूम्र २, सिंह ३, श्वान ४, वृष ५, खर ६ गज ७, ध्वांक्ष ८ यह आठ आय हुए इनसे शुभाशुभ फल क्रमसे जानना । इनके जाननेका प्रकार यह है कि प्रश्नके अक्षरोंसे प्रथम वर्ण अवर्ग हो तो ध्वज आय जानना और कवर्ग हो तो धूम्र जानना इसी प्रकार चवर्ग हो तो सिंह जानना, टवर्ग हो तो श्वान जानना, तवर्ग हो तो वृष, पवर्ग हो तो खर, यवर्ग हो तो गज और शवर्ग हो तो ध्वांक्ष जानना चाहिये इस प्रकार ध्वजादि आय जानकर फिर शुभाशुभ फल क्रमसे कहना चाहिये ।। ४ ।।

अथ ध्वजादिस्वामिनः

ध्वजेसूर्यश्चविज्ञेयः धूम्रेभौमस्तथैव च ।।
सिंहे शुक्रश्च विज्ञेयः श्वाने सौम्यस्तथैवच ।। ५ ।।
वृषे गुरुश्च विज्ञेयः खरे सूर्यसुतस्तथा ।।
गजे ध्वांक्षे चन्द्रराहू ह्येते च पतयः स्मृताः ।। ६ ।।

अर्थ – ध्वजका स्वामी सूर्यको जानना, इसी प्रकार धूम्रका स्वामी मंगलको, सिंहका स्वामी शुक्रको, इसी प्रकार श्वानका स्वामी बुधको ।। ५ ।। वृषका स्वामी बृहस्पतिको जानना और खरका स्वामी शनिको जानना, तथा गजका स्वामी चन्द्रमा व ध्वांक्षका स्वामी राहु कहा है ।। ६ ।। अब इन ध्वादिकोंको स्पष्ट करके चक्रमें नीचे लिखते हैं ।

ध्वजादिचक्रम्

सं.	आय.	वर्गाद्यक्षर.					स्वामी.
१	ध्वज	अ	इ	उ	ए	ओ	सूर्य
२	धूम्र	क	ख	ग	घ	ङ	मंगल
३	सिंह	च	छ	ज	झ	ञ	शुक्र
४	श्वान	ट	ठ	ड	ढ	ण	बुध
५	वृष	त	थ	द	ध	न	बृहस्पति
६	खर	प	फ	ब	भ	म	शनि
७	गज	य	र	ल	व	०	चन्द्र
८	ध्वांक्ष	श	ष	स	ह	०	राहु

जब प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तब उसके प्रश्नके अक्षरोंमें प्रथम अक्षर अकार हो जैसे "आज हमारा कार्य होगा" ऐसे प्रश्नमें आद्यक्षर आकार है इस वास्ते "ध्वज" आय जानना इसका स्वामी सूर्य है इसका फल जो आगे कहेंगे सो कहना इसी प्रकार प्रश्नका आद्यक्षर कवर्ग हो तो "धूम्र" चवर्ग हो तो "सिंह" इसी तरह औरोंको भी जानना ॥

अथ कार्याकार्यप्रश्नः

ध्वजकुंजरसिंहेषु वृषे सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कार्यसिद्धिर्भवेन्नहि ॥ ७ ॥

अर्थ – यदि पूर्वोक्त रीतिसे ध्वज, कुंजर, सिंह और वृष ये आय आवें तो कहना कि कार्यकी सिद्धि होगी । और यदि ध्वांक्ष, श्वान, खर तथा धूम्र आय आवें तो कहना कि कार्यकी सिद्धि न होगी ॥ ७ ॥

अथ मनोविचारितकार्यप्रश्नः

ध्वजकुंजरसिंहेषु वृषे चास्ति विनिश्चितम् ॥
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति समुदाहृतम् ॥ ८ ॥

अर्थ – यदि मानसिक कार्यकी सिद्धिका प्रश्न हो और उसमें ध्वज, गज, सिंह और वृष आय हों तो कहना कि निश्चयसे कार्यकी सिद्धि होगी और यदि ध्वांक्ष, श्वान, खर तथा धूम्र आय हों तो कार्यसिद्धि न होगी ऐसा कहना ॥ ८ ॥

अथ लाभालाभप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शीघ्रं लाभो भवेद्ध्रुवम् ॥
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाशश्च कलहप्रदः ॥ ९ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि लाभ होगा या नहीं ? तो विचारना यदि ध्वज, गज, वृष, सिंह आय हों तो कहना शीघ्रही लाभ होगा और यदि ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र आय हों तो कहना कि लाभ न होगा तकरार होगी ॥ ९ ॥

अथ नष्टवस्तुलाभालाभप्रश्नः ।

६२ ध्वजे गजे वृषे सिंहे नष्टलाभो भवेद्ध्रुवम् ॥
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने हानिर्भवति निश्चितम् ॥ १० ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि हमारी वस्तु जो नष्ट हो गई है वह मिलेगी या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें विचार करना यदि ध्वज, गज, वृष, सिंह आय हों तो नष्ट वस्तुका अवश्य लाभ होगा ऐसा कहना । तथा ध्वांक्ष, धूम्र, श्वान आय हों तो कहना कि नष्ट वस्तुका लाभ नहीं होगा ॥ १० ॥

अथ चौरजातिज्ञानम् । २०४८/६६

ध्वजे च ब्राह्मणश्चौरो धूम्रे क्षत्रिय एव च ॥
सिंहे वैश्यश्च विज्ञेयः खरे च सेवकस्तथा ॥ ११ ॥
गजे दासी च विज्ञेया ध्वांक्षे च नायकस्तथा ॥
वृषे श्वाने तथा ज्ञेयश्चौरश्चांत्यजसंभवः ॥ १२ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि चोरकी क्या जाति है ? ऐसे प्रश्नमें विचार करना कि यदि ध्वज आय हो तो ब्राह्मण चोर जानना, धूम्र हो तो निश्चय क्षत्रिय जानना, सिंह हो तो वैश्य जानना, इसी प्रकार खर आय हो तो सेवक जानना ॥ ११ ॥ यदि गज आय हो तो दासी चोर जानना, ध्वांक्ष हो तो नायक अर्थात् मालिक चोर है ऐसा कहना । और यदि वृष या श्वान आय हों तो शूद्र जातिका चोर है ऐसा कहना । ज्योतिषीको चाहिये कि इस प्रकारसे विचार करके चोरकी जाति बतावे ॥ १२ ॥

अथ नष्टवस्तुदिग्ज्ञानम्

ध्वजे पूर्वगतं चैव धूम्रे चाग्नेयदिग्गतम् ॥
सिंहे च दक्षिणे वस्तु श्वाने नैर्ऋत एव च ॥ १३ ॥
पश्चिमे वृषभे ज्ञेयं वायव्यां च खरे तथा ॥
उत्तरे कुंजरे द्रव्यमीशान्यां ध्वांक्षके तथा ॥ १४ ॥

अर्थ – यदि कोई पुछे कि चोर किस दिशामें गया है अथवा नष्ट वस्तु किस दिशामें रक्खी है ? उसको कहते हैं । यदि प्रश्नमें ध्वज आय हो तो कहना कि पूर्व दिशामें है और धूम्र आय हो तो आग्नेय दिशामें कहना, सिंह हो तो दक्षिण दिशामें कहना, श्वान हो तो नैर्ऋत दिशामें चोर या वस्तुको कहना चाहिये ॥ १३ ॥ और वृष आय हो तो पश्चिम दिशामें जानना इसी प्रकार खर आय हो तो वायव्य दिशामें जानना और गज आय हो तो उत्तर दिशामें जानना, ध्वांक्ष आय हो तो ईशान कोणमें द्रव्य या चोर कहना ॥ १४ ॥

अथ नष्टवस्तुस्थानज्ञानम्

ऊषरे च ध्वजे नष्टं धूम्रे चाग्निगृहे तथा ॥
गतं सिंहे तथारण्ये श्वाने स्थानांतरेऽपि च ॥ १५ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि नष्ट वस्तु किस स्थानमें रक्खी है ? इसके बतानेकी विधि यह है कि यदि ध्वज आय हो तो कहना कि ऊषर भूमिमें नष्ट वस्तु रक्खी है और यदि धूम्र हो तो कहना कि अग्निगृह अर्थात् यज्ञशाला या भोजन गृहमें रक्खी है, तथा सिंह आय हो तो वनमें कहना, श्वान आय हो तो स्थानान्तरमें नष्ट वस्तु कहना ॥ १५ ॥

अथ प्रवासिकुशलप्रश्नः

ध्वजे सिंहे वृषे चैव कुंजरे कुशलं भवेत् ॥
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत् ॥ १६ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि प्रवासी कुशलपूर्वक है या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें देखना यदि ध्वज, सिंह, वृष, तथा कुंजर (गज) आय हों तो कहना प्रवासी कुशलपूर्वक है और यदि ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र आय प्रश्नमें हों तो कहना कि परदेशी कष्टमें पडा है ॥ १६ ॥

---

१ इस प्रश्नमें चारही आयोंका स्थान कहा है बाकी चार आयोंका स्थान इस ग्रन्थमें नहीं मिला. यदि किसी महाशयको कहीं मिले तो सूचित करें मैं उनको कोटिशः धन्यवाद दूंगा ॥

अथ प्रवासिचरस्थिरप्रश्नः

ध्वजे गजे स्थिरश्चैव श्वाने सिंहे च चंचलः ।।
वृषे धूम्रे प्रयाणस्थः खरे ध्वांक्षे स कष्टकः ।। १७ ।।

अर्थ – कोई पूछे कि प्रवासी जहां गया है वहीं स्थिर है या वहांसे स्थानान्तरको जा रहा है ? ऐसे प्रश्नमें देखना कि ध्वज तथा गज आय प्रश्नमें हो तो कहना कि जहां गया है वहांही स्थिर है और यदि श्वान या सिंह आय हो तो चंचल अर्थात् वहांसे चल दिया है, यदि वृष, धूम्र आय हों तो कहना कि रास्तामें ठहरा है और खर या ध्वांक्ष आय हों तो कहना कि परदेशी कष्टयुक्त है ।। १७ ।।

अथ गमनप्रश्नः

ध्वजे धूम्रे समीपस्थो दूरस्थो गजसिंहयोः ।।
वृषे खरे च मार्गस्थो ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतः ।। १८ ।।

अर्थ – कोई प्रश्न करे कि परदेशी चला है या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें देखना कि ध्वज या धूम्र आय हो तो कहना कि समीप में आ गया है और यदि गज या सिंह आय हो तो अभी दूर है ऐसा कहना। वृष या खर आय हो तो मार्गमें स्थित जानना और ध्वांक्ष या श्वान आय हो तो कहना कि परदेशी समीप आकर मार्ग में से ही फिर पीछे लौट गया ।। १८ ।।

अथागमनसमयप्रश्नः

ध्वजे पक्षमितिप्रोक्तं धूम्रेसप्तदिनं तथा ।।
एकविंशश्च सिंहे च श्वाने मासं तथैव च ।। १९ ।।
वृषे तु सार्द्धमासं च खरे मासद्वयं तथा ।।
गजेमासत्रयं प्रोक्तं ध्वांक्षे ह्ययनसंमितम् ।। २० ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि परदेशी कितने दिनोंमें आवेगा ? ऐसे प्रश्नमें देखना कि ध्वज आय हो तो कहना एक पक्षमें आवेगा। इसी प्रकार धूम्र आय हो तो सात दिनमें कहना। तथा सिंह आय हो तो २१ एकविंशति दिनमें आवेगा। तथा श्वान आय हो तो एक महीनेमें आवेगा कहना ।। १९ ।। और यदि वृष आय हो तो ।। १ ।। डेढ मासकी अवधि कहना, और खर आय हो तो २ दो मासमें आवेगा ऐसा कहना, गज आय हो तो ३ तीन मासमें आवेगा कहना, तथा ध्वांक्ष आय हो तो १ एक अयन (छः मास) में आवेगा ऐसा निश्चय कहना। यह अवधि कही। इसी तरह से कितने दिनमें कार्य होगा या कबतक वस्तु प्राप्त होगी इन प्रश्नोंकी भी अवधि कहनी चाहिये ।। २० ।।

अथ धातुजीवमूलचिंताप्रश्नः

ध्वजे धूम्रे धातुचिन्तां गजे सिंहे च मूलकम् ।।
श्वाने खरे वृषे ध्वांक्षे जीवचिन्तां वदेद्बुधः ।। २१ ।।

अर्थ – अब मूकप्रश्न कहते हैं यदि प्रश्नकर्त्ता प्रश्न अपने मनमें रक्खे और पूछे कि हमारे मनमें क्या चिन्ता है तहां विचार करना कि ध्वज या धूम्र आय हो तो धातुचिन्ता कहना और यदि गज या सिंह आय हो तो मूलचिन्ता कहना और यदि श्वान, खर, वृष, ध्वांक्ष आय हों तो जीवचिन्ताका प्रश्न निश्चय कहना ।। २१ ।।

ध्वजे सुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रे रौप्यं तथैव च ।।
सिंहे ताम्रं च विज्ञेयं श्वाने लोहं तथैव च ।। २२ ।।
वृषे कांस्यं खरे नागं कथितं सीसकं गजे ।।
ध्वांक्षे पित्तलकं ज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः ।। २३ ।।

अर्थ – अब धातुका भेद कहते हैं उसका प्रकार यह है कि धातुप्रश्न निश्चय होनेपर प्रश्नकर्तासे फिर प्रश्न करावे यदि ध्वज आय आवे तो सोना कहना और धूम्र आय आवे तो चांदी जानना, सिंह आय आवे तो तामा जानना, और श्वान आय आवे तो लोहा कहना, तथा वृषआय आवे तो काँसी धातु कहना और खर आय आवे तो राँग धातु कहना तथा गज आय आवे तो सीसा धातु कहना और ध्वांक्ष आय आवे तो पीतल जानना ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषियोंने कहा है ।। २२ ।। २३ ।।

ध्वजे आभूषणं मूर्ध्नि धूम्रे तु मुखभूषणम् ।।
कंठस्याभूषणं सिंहे श्वाने च कर्णयोरिदम् ।। २४ ।।
वृषे हस्तभवं ज्ञेयमंगुलीभूषणं खरे ।।
गजे तु कटिसूत्रं स्याद्ध्वांक्षे पादादिकं तथा ।। २५ ।।

अर्थ – अब स्वर्णादि धातु निश्चय होनेपर यदि यह प्रश्न करे कि वह धातु किस अंगका आभूषण है ? ऐसे प्रश्नमें यदि ध्वज आय आवे तो शिरका आभूषण कहना और यदि धूम्र आय हो तो मुखपरका रहनेवाला आभूषण जानना और सिंह आय आवे तो गलेका आभूषण जानना और श्वान आय हो तो कानका आभूषण कहना ।। २४ ।। तथा वृषमें हाथका, खरमें अंगुलीका और गजमें कमरका तथा ध्वांक्षमें पैरसम्बन्धी आभूषण कहना चाहिये ।। २५ ।।

अथ मुष्टिप्रश्नः

कुसुंभं च ध्वजे ज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैव च ।।
लोहितांगं भवेत्सिंहे श्वाने पांडुरनीलकम् ।। २६ ।।
पीतवर्णं वृषे ज्ञेयं खरे च मिश्रवर्णकम् ।।
गजे च श्यामवर्णं च ध्वांक्षे च मिश्रवर्णकम् ।। २७ ।।

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि हमारे हाथमें क्या वस्तु है तथा कैसा रंग है ? ऐसे प्रश्नमें यदि ध्वज आय आवे तो कुसुंभी रंगकी वस्तु कहना और यदि धूम्र आय आवे तो श्वेत वर्णकी वस्तु है ऐसा जानना और सिंह आयमें रक्तवर्ण तथा श्वानमें पांडुरंग मिला हुआ नीलारंग कहना

॥ २६ ॥ और वृष आयमें पीला वर्ण जानना तथा खर आयमें कई रंग मिला हुआ जानना और गज आयमें श्यामवर्ण जानना तथा ध्वांक्षमें भी मिला हुआ वर्ण मुष्टिगत वस्तुका कहना चाहिये ॥ २७ ॥

तथा च

ध्वजे पत्रं च विज्ञेयं धूम्रे पुष्पं प्रकीर्तितम् ॥
सिंहे फलं च विज्ञेयं श्वाने काष्ठादिकं तथा ॥ २८ ॥

वृषे धान्यं तथा प्रोक्तं खरे तृणं निगद्यते ॥
गजे बीजं च विज्ञेयं तुषं ध्वांक्षे तथा स्मृतम् ॥ २९ ॥

अर्थ – ध्वज आय आवे तो पत्र जानना और धूम्र आय आवे तो पुष्प कहना चाहिये और सिंह आय आवे तो फल कहना और श्वान आय आवे तो काष्ठआदि मिश्रित वस्तु कहना चाहिये ॥ २८ ॥ तथा वृष आय आवे तो धान्य कहा हुआ है तथा खरमें तृण कहा है, गजमें बीज जानना तथा ध्वांक्षमें तुष अर्थात् भूसी जानना ऐसा कहा है ॥ २९ ॥

अथ कन्यापुत्रजन्मप्रश्नः

ध्वजे वृषे गजे सिंहे गुर्विण्याः पुत्रमादिशेत् ॥
धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत् ॥ ३० ॥

अर्थ-यदि कोई पूछे कि इस गर्भिणी स्त्रीके कन्या या पुत्र क्या संतान होगी ? ऐसे प्रश्नमें यदि ध्वज, वृष, गज और सिंह आय आवें तो कहना कि गर्भवती स्त्रीके पुत्र होगा। तथा धूम्र श्वान, खर और ध्वांक्ष आय हों तो कन्याका जन्म कहना चाहिये ॥ ३० ॥

अथायुःप्रमाणम् ।

ध्वजे सिंहे शतं प्रोक्तं गजे व्योमगजस्तथा ॥
वृषे च षष्टिवर्षाणि खरे व्योमाब्धिसंज्ञकम् ॥ ३१ ॥

श्वाने च विंशतिः प्रोक्ता ध्वांक्षे च षोडशस्तथा ॥
धूम्रे वर्षमिति ज्ञेयमित्यायुश्च विचिन्तयेत् ॥ ३२ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि आयुका प्रमाण कितना है ? तो देखना कि ध्वज, सिंह आयमें १०० सौ वर्षकी आयु कही है और गज आय आवे तो ८० अस्सी वर्षकी आयु कही है, तथा वृष आयमें ६० साठ वर्षकी, खर आयमें ४० चालिस वर्षकी, श्वानमें २० बीस वर्षकी, ध्वांक्ष आयमे १६ सोलह वर्षकी और धूम्र आयमें १ एक वर्षकी आयुका प्रमाण कहा है इस प्रकारसे आयुका विचार करना चाहिये ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

अथ जयपराजयप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे स्थायिनो जयमाप्नुयुः ॥
धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे यायिनो जयमादिशेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ – जय पराजय प्रश्नमें ध्वज, गज, वृष, सिंह आय आवे तो स्थायीकी जय कहनी। धूम्र, श्वान, खर, ध्वांक्ष आय आवे तो यायीकी जय कहनी ॥ ३३ ॥

अथ शत्रोरागमनप्रश्नः

उपश्रुतिः स्याद्भवतीति सत्या ध्वजे गजे सिंहवृषे तु प्रश्ने ॥ श्वाने वृषे ध्वांक्षकधूम्र एवमुपश्रुतिः स्याद्भवतीति मिथ्या ॥ ३४ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि हमको शत्रुके आगमनकी खबर मिली है सो सत्य है या मिथ्या ? ऐसे प्रश्नमें ध्वज, गज, सिंह तथा वृष आय हों तो खबर सच्ची है और यदि श्वान, वृष, ध्वांक्ष, धूम्र आय हों तो शत्रुके आगमनकी खवर मिथ्या है ऐसा कहना ॥ ३४ ॥

अथ वृष्टिप्रश्नः

धूम्रे गजे वृषे श्वाने वृष्टिर्भवति चोत्तमा ॥
ध्वजे सिंहे विलम्बश्च खरे ध्वांक्षे न वर्षणम् ॥ ३५ ॥

अर्थ – यदि कोई प्रश्न करे कि वर्षा कैसी होगी ? ऐसे प्रश्नमें देखना कि धूम्र, गज, वृष, श्वान आय हों तो कहना कि वर्षा उत्तम होगी। तथा ध्वज, सिंह हो तो विलम्बसे कहना और खर या ध्वांक्ष आय हो तो अवर्षण कहना अर्थात् वर्षा नहीं होगी ॥ ३५ ॥

अथ दिनादिज्ञानम्।

धूम्रे सप्त दिनं प्रोक्तं वृषे विंशस्तथैव च ॥
श्वाने च विंशतिर्ज्ञेया गजे च सप्तविंशतिः ॥ ३६ ॥
सिंहे ध्वजे च व्योमाब्धिः खरे ध्वांक्षे ऋतुस्तथा ॥
वर्षाकाले क्रमो ह्येष कथितो गणकोत्तमैः ॥ ३७ ॥

अर्थ – कोई पूछे कि वर्षा कितने दिनमें होगी ? तहां धूम्र आय हो तो सात दिनमें कहन और गजमें २७ सत्ताईस दिनमें और सिंहमें या ध्वजमें ४० चालिस दिनमें और खर या ध्वांक्ष आय हो तो १ ऋतु अर्थात् २ मासमें वर्षा होगी ऐसा कहना यह क्रम वर्षाकालके लिये उत्त ज्योतिषियोंने कहा है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ स्त्रीलाभप्रश्नः

ध्वजे च सिंहे च वृषे च शीघ्रं स्त्रियं सुरूपां लभते सुशीलाम् ॥ श्वाने गजे ध्वांक्षखरे च धूम्रे कार्यस्य हानिः कलहस्तथैव ॥ ३८ ॥

अर्थ – यदि कोई पूछे कि स्त्री मिलेगी या नहीं और कैसी स्त्री प्राप्त होगी ऐसे प्रश्नमें देखना यदि ध्वज, सिंह और वृष आय हों तो कहना कि सुन्दर रूपवाली सुशीला गुणवती स्त्रीको शीघ्र प्राप्ति होगी, तथा श्वान, गज, ध्वांक्ष, खर और धूम्र आय हों तो कार्यकी हानि अर्थात स्त्रीको प्राप्ति नहीं होगी तथा कलह होगा ऐसा कहना ॥ ३८ ॥

अथ व्यवहारप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे व्यवहारः शुभावहः ॥
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कलहाद्यशुभप्रदः ॥ ३९ ॥

अर्थ – यदि प्रश्नमें ध्वज, गज, वृष और सिंह आय आवे तो शुभ व्यवहार कहा है तथा ध्वांक्ष, श्वान, खर और धूम्र आय हों तो व्यवहारमें कलह आदि अशुभ फल जानना ॥ ३९ ॥

अथ राज्यप्राप्तिप्रश्नः

गजे ध्वजे चिरात्प्राप्तिर्वृषे सिंहे च शीघ्रता ॥
श्वाने खरे न च प्राप्तिः शत्रुर्गृह्णाति वै ध्रुवम् ॥ ४० ॥
ध्वांक्षे धूम्रे पदं नास्ति कलहो भ्रातृभिः सह ॥
राजयोगविचारेषु कथितो गणकोत्तमैः ॥ ४१ ॥

अर्थ – राज्यप्राप्तिप्रश्नमें गज, ध्वज आय हों तो बहुत कालमें राज्यकी प्राप्ति होगी और वृष या सिंह आय हो तो बहुत शीघ्र प्राप्ति कहना तथा श्वान या खर आय हो तो राज्यकी प्राप्ति नहीं होगी शत्रुके वशमें रहेगी ऐसा कहना ॥ ४० ॥ तथा ध्वांक्ष या धूम्र आय हो तो राज्यका पद नहीं मिलेगा, भाइयोंके साथ कलह होगा ऐसा राजयोगके विचारमें उत्तम ज्योतिषियोंने कहा है ॥ ४१ ॥

अथ नौकाप्रश्नः

ध्वजकुंजरसिंहेषु वृषे च कुशलप्रदाः ॥
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने ध्रुवं नौका निमज्जति ॥ ४२ ॥

अर्थ – यदि कोई पूछे कि हमारी नौका अर्थात् नाव कुशलपूर्वक है या नहीं ऐसे प्रश्न में यदि ध्वज, गज, सिंह और वृष आय आवे तो कहना कि कुशलपूर्वक है, तथा ध्वांक्ष, धूम्र, खर और श्वान आय आवे तो नौका जलमें डूब गई अथवा डूब जायगी ऐसा कह देना चाहिये ॥४२॥

अर्थाधिकारप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजे गजे स्थिरं प्राप्तिर्वृषे सिंहे च सत्वरम् ॥
कलहश्च खरे श्वाने नास्ति च ध्वांक्षधूम्रयोः ॥ ४३ ॥

अर्थ – अधिकारप्रश्नमें ध्वज, गज आय हों तो देरमें प्राप्त होगा और वृष तथा सिंह आय हों तो शीघ्र प्राप्ति कहना, तथा खर या श्वान आय हों तो कलहसे अधिकार मिले तथा ध्वांक्ष या धूम्र आय हों तो कहना कि अधिकार नहीं मिलेगा ॥ ४३ ॥

अथ ग्रामप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे ग्रामप्राप्तिर्भवेद्ध्रुवम् ।।
श्वाने खरे तथा ध्वांक्षे धूम्रे नास्तीति निश्चितम् ।। ४४ ।।

अर्थ – ग्रामप्राप्तिप्रश्नमें पूर्वोक्त नियमोंसे ध्वज, गज, वृष और सिंह आय आवे तो कहना कि निश्चयसे ग्राम प्राप्त होगा तथा श्वान, खर, ध्वांक्ष और धूम्र आय आवे तो प्राप्ति नहीं होगी ऐसा कहना ।। ४४ ।।

अथ कार्यसिद्धिप्रश्नः

ध्वजे गजे स्थिरं कार्यं त्वरितं वृषसिंहयोः ।।
दीर्घकाले खरे श्वाने ध्वांक्षे धूम्रे न सिद्धचति ।। ४५ ।।

अर्थ – ध्वज गज आय आवे तो कहना कि स्थिर अर्थात् विलम्बसे कार्यकी सिद्धि होगी और वृष या सिंह आय आवे तो उसी क्षण कार्यकी सिद्धि कहनी, खर तथा श्वान आय हों तो बहुत कालमें कार्य सिद्धि कहनी और यदि ध्वांक्ष या धूम्र आय हो तो कार्यकी सिद्धि नहीं होगी ऐसा कहना ।। ४५ ।।

अथ बन्दिमोक्षप्रश्नः

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे बन्दी शीघ्रं प्रमुच्यते ।।
ध्वजे गजे वृषे सिंहे बन्दिकष्टं समादिशेत् ।। ४६ ।।

अर्थ – कोई पूछे कि अमुक मनुष्य बन्दीखानेसे छूट जायगा या नहीं ? ऐसे प्रश्नमें पूर्वोक्त रीतिसे धूम्र, श्वान, खर या ध्वांक्ष आय आवे तो बन्दीसे शीघ्र छूट जावेगा ऐसा कहना और यदि ध्वज, गज, वृष या सिंह आय आवे तो कैदी छूटे नहीं कष्टमें रहेगा ऐसा कहना ।। ४६ ।।

अथ देवपूजा

ध्वजे भैरवपूजा स्याद्धूम्रे च जगदंबिकाम् ।।
सिंहे च पूजयेत्सूर्यं श्वाने वायुसुतं तथा ।। ४७ ।।
वृषे शिवार्चनं चैव खरे वागीश्वरी तथा ।।
गणेशं गजराजाख्ये ध्वांक्षे च पितृपूजनम् ।। ४८ ।।

अर्थ – यदि कोई पूछे कि किस देवताका पूजा करनेसे कार्यकी सिद्धि होगी अथवा हमको किस देवताका इष्ट होगा ? ऐसे प्रश्नमें पूर्वोक्त रीतिसे ध्वज आय आवे तो कहना कि भैरवजीकी पूजासे कार्यकी सिद्धि होगी अथवा भैरव देवताका इष्ट होगा, इसी प्रकार धूम्रमें जगदंबा भगवतीका कहना, सिंहमें सूर्य देवका पूजन कहना, श्वानमें हनुमान्का पूजन कहना वृषमें शिवजीका पूजन कहना, खरमें वागीश्वरी भगवतीका पूजन कहना तथा गजमें गणेशका पूजन तथा ध्वांक्षमें पितरोंका पूजन कहना चाहिये ।। ४७ ।। ४८ ।।

अथ दानादि

गोधूमान्नं ध्वजे दद्याद्धूम्रे चैव तिलास्तथा ।।
पीतवस्त्रं च सिंहे वै श्वाने च वलिविस्तरम् ।। ४९ ।।
वृषे च तंदुलाः प्रोक्ताः खरे चणकधान्यकम् ।।
गजे गुडं तथा दद्याद्ध्वांक्षे च यवधान्यकम् ।। ५० ।।

अर्थ – यदि ध्वज आय हो तो गेहूंका दान देना और धूम्र आय आवे तो तिलका दान देना, तथा सिंह आय हो तो पीला वस्त्र देना, श्वान आय हो तो बलिदान देना, तथा वृष आयमें चावल देना कहा है, तथा खरमें चना देना और गजमें गुड देना तथा ध्वांक्षमें यव देना ।। ४९ ।। ५० ।।

अथ कालनियमप्रश्नः

ध्वजे सप्तदिनं प्रोक्तं सिंहे पक्षस्तथैव च ।।
वृषे मासश्च विज्ञेयो गजे मासत्रयं तथा ।। ५१ ।।
श्वाने खरे च षण्मासं धूम्रे ध्वांक्षे च वर्षकम् ।।
इति कालं वदेत्प्रश्ने सर्वकार्येषु चिन्तयेत् ।। ५२ ।।

अर्थ – यदि कोई पूछे कि कार्य कितने दिनमें होगा ऐसे प्रश्नमें उक्त रीतिसे ध्वज आय आवे तो सात दिनमें कार्य सिद्धि कहा है तथा सिंहमें पक्ष कहना और वृषमें मास कहना तथा गजमें तीन मास कहना इसी प्रकार श्वानमें तथा खरमें छः मास कहना और धूम्र, ध्वांक्षमें १ वर्ष कहना इसी प्रकार प्रश्नसे संपूर्ण कार्योंमें कालका चिन्तन करना ।। ५१ ।। ५२ ।।

अथ नारदोक्ताङ्गादिविद्या

अंगविद्यां प्रवक्ष्यामि नारदेन स्वयंकृताम् ।।
अंगस्पर्शनमात्रेण ज्ञातव्यं हि शुभाशुभम् ।। ५३ ।।

अर्थ – श्रीनारद भगवान्ने जो स्वयं बनाया है ऐसी अंगविद्या कहते हैं । शरीरके स्पर्श मात्र से निश्चय शुभाशुभ फल जानें उसका प्रकार कहते हैं ।। ५३ ।।

स्पृश्यमाने शिरे पृच्छेन्महालाभो भविष्यति ।।
हिरण्यधनधान्यस्य भवेल्लाभोऽस्य निश्चितम् ।। ५४ ।।

अर्थ – यदि प्रश्नकर्ता शिरको स्पर्श करता हुआ पूछे तो कहना कि तुमको सोनाआदि धन धान्यका निश्चय करके बहुत लाभ होगा ।। ५४ ।।

मुखं च नासिकां चैव चक्षुः श्रवणमेव च ।।
स्पृशज्जनो यदा पृच्छेत्तदा लाभं विनिर्दिशेत् ।। ५५ ।।

अर्थ – इसी प्रकार मुख, नाक, नेत्र और कानको स्पर्श करके प्रश्न करे तो भी लाभ कहना ।। ५५ ।।

ग्रीवां स्कन्धं तथा कंठं बाहुं चैव तथा स्पृशेत् ॥
पृच्छति पृच्छको यस्य तस्य लाभोऽल्प एव च ॥ ५६ ॥

अर्थ – तथा ग्रीवा, कंधा, कंठ और बाहुको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो पृच्छकको थोडा लाभ होगा ऐसा कहना ॥ ५६ ॥

उदरं नाभिमूलं वा स्पृष्ट्वा यः पृच्छति स्वयम् ॥
अन्नपानं भवेत्तस्य कृषिकर्मेति सिद्ध्यति ॥ ५७ ॥

अर्थ – यदि पेट या नाभिमूलको स्पर्श करके प्रश्न करे तो कहना कि कृषिकर्म अर्थात् खेती करनेसे सिद्धि होवे अन्नका लाभ होवे ॥ ५७ ॥

कटिं शिश्नं तथोरुं च पृच्छको यदि संस्पृशेत् ॥
कन्यालाभो भवेत्तस्य पुत्रसम्पत्तिरेव च ॥ ५८ ॥

अर्थ – यदि कमर, लिंग तथा ऊरुको स्पर्श करके पृच्छक प्रश्न करे तो उसको कन्याका लाभ होवे और पुत्रकी संपत्ति होवे ॥ ५८ ॥

जानुजंघे तथा गुल्फौ पादौ च यदि संस्पृशेत् ॥
पृच्छकस्य भवेन्मृत्युः क्लेशो वापि न संशयः ॥ ५९ ॥

अर्थ – यदि जानुको जंघाको गुल्फोंको तथा पैरोंको स्पर्श करता हुआ पूंछे तो प्रश्नकर्ताकी मृत्यु कहनी अथवा क्लेश कहना इसमें सन्देह नहीं है ॥ ५९ ॥

फलं पुष्पं नवं वस्त्रं गृहीत्वा यदि पृच्छति ॥
सर्वं च पृच्छतस्तस्य जायते सफलोदयम् ॥ ६० ॥

अर्थ – अथवा प्रश्नकर्ता फल, फूल या नवीन वस्त्रको ग्रहण करके प्रश्न करे तो (पुछने वालेकी) संपूर्ण मनोकामना पूर्ण होवे ऐसा कहना चाहिये ॥ ६० ॥

अंगारकांस्तृणादींश्च गृहीत्वा यदि पृच्छति ॥
न तस्य जायते सिद्धिः कार्यस्य प्रयतोपि हि ॥ ६१ ॥

अर्थ – तथा यदि प्रश्नकर्ता अंगार या तृणादिकोंको स्पर्श करके प्रश्न करे तो उसके कार्यकी सिद्धि न होगी ऐसा निश्चयसे कह देना चाहिये ॥ ६१ ॥

शस्त्रं काष्ठं तथा गन्धं गृहीत्वा यदि पृच्छति ॥
क्षोभस्तस्य भवेन्नित्यं ग्रहदोषश्च जायते ॥ ६२ ॥

अर्थ – यदि प्रश्नकर्ता शस्त्रको या काष्ठको अथवा गन्धको ग्रहण करके प्रश्न करे तो कहना कि तुमको क्षोभ होगा तथा ग्रहोंका दोष कहना चाहिए ॥ ६२ ॥

हिरण्यं रत्नभांडं च गृहीत्वा चान्नपानकम् ॥
पृच्छकः सिद्धिमाप्नोति सद्य एव न संशयः ॥ ६३ ॥

अर्थ – यदि पृच्छक सोना या रत्नोंके रखनेके भांड अर्थात् पात्रको अथवा अन्न पानादिकों को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो पृच्छककी सद्यही सिद्धि हो इसमें संशय नहीं ।। ६३ ।।

आरामस्य स्पृशन्भूमिं यदा पृच्छति पृच्छकः ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ।। ६४ ।।

अर्थ – यदि आराम अर्थात् बगीचाकी पृथ्वीको स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो पृच्छकके सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धि होवे इसमें संशय नहीं है । अन्य कोई विचार न करना ।। ६४ ।।

देवगेहे नदीतीरे स्थाने चैव मनोरमे ।।
उपविश्य यदा पृच्छेत्तदा सिद्धिमवाप्नुयात् ।। ६५ ।।

अर्थ – यदि पृच्छक देवताके स्थानमें अथवा नदीके किनारे पर अथवा किसी सुन्दर रमणीक स्थान में स्थित होकर प्रश्न करे तो कार्यकी सिद्धि होगी ऐसा कहना ।। ६५ ।।

शुष्ककाष्ठे क्षते दुष्टे गुल्मे भग्ने तथैव च ।।
स्थानेष्वेतेषु यः पृच्छेत्तस्य क्लेश समादिशेत् ।। ६६ ।।

अर्थ – यदि पृच्छक सूखे काष्ठपर अथवा कटे हुए काष्ठपर या दुष्ट स्थान अथवा दुष्ट काष्ठपर गुल्म पर अथवा भग्न स्थानपर स्थित होकर प्रश्न करे तो उसको क्लेश होगा ऐसा कहना ।। ६६ ।।

सुखोपविष्टे दिक्स्थे च पृच्छके सिद्धिरद्भुता ।।
विदिक्स्थिते दुरासीने कार्यासिद्धिर्न संशयः ।। ६७ ।।

अर्थ – यदि प्रश्नकर्ता सुखपूर्वक पूर्वादि दिशाओं में स्थित होकर प्रसन्नमनसे प्रश्न करे तो कार्यकी अद्भुत सिद्धि कहनी तथा आग्नेयादि कोणोंमें अशुभ स्थानमें स्थित होकर पूछे तो कार्यकी असिद्धि कहनी चाहिये संपूर्ण प्रश्नोंके सिद्ध्यसिद्धिका मुख्य कारण यही है ।। ६७ ।।

अथ प्रश्नाक्षरोपरि लग्नज्ञानम्

अवर्गे सिंहलग्नं च कवर्गे मेषवृश्चिकौ ।।
चवर्गे यूकवृषभौ टवर्गे युग्मकन्यके ।। ६८ ।।
तवर्गे धनमीनौ च पवर्गे कुंभनक्रकौ ।।
यशवर्गे कर्कटश्च लग्नं शब्दाक्षरैर्वदेत् ।। ६९ ।।

इति केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रहः समाप्तः ।

अर्थ – प्रश्नका प्रथम अक्षर अवर्ग हो तो सिंह लग्न जानना, कवर्ग हो तो मेष और वृश्चिक लग्न, तथा चवर्गमें तुल और वृष लग्न, तथा टवर्गमें मिथुन और कन्या लग्न तथा तवर्गमें धन और मीन लग्न, तथा पवर्गमें कुम्भ और मकर लग्न तथा यवर्ग अथवा शवर्ग हो तो कर्क लग्न जानना चाहिये । जहां २ एक वर्गमें दो २ लग्न कहे हैं उनमें से एक लग्न निश्चय करनेका प्रकार यह है कि प्रश्नाक्षर विषम हो तो विषम लग्न कहना तथा सम हो तो सम लग्न कहना ।।६८।।६९ ।।

इति श्रीकाशीप्रान्तीयतेलारीग्रामनिवासिविद्वद्वररघुनन्दनशर्मात्मजशालग्रामज्योतिर्विद्विरचितकेरलतत्त्वप्रश्नसंग्रहहिन्दीटीकायामुत्तरार्द्धं समाप्तम् ।

काश्याः पश्चिमदिग्भागे तेलारीग्रामधामकः ।।
त्रिपाठी देवदत्तोऽभूत्ततोऽभूद्रघुनन्दनः ।। १ ।।

रघुनन्दनपादाब्जसेवकाद्रघुनन्दनात् ।।
शालग्रामोऽभवद्येन टीकेयं नृगिरा कृता ।। २ ।।

अर्थ – काशीजीसे पश्चिम दिशामें तेलारीनामका एक ग्राम है उसमें देवदत्तनामक त्रिपाठी हुए उनके पुत्र रघुनन्दन त्रिपाठी होते भये । श्रीरामचंद्रजीके चरणसेवक उन रघुनन्दन त्रिपाठीसे शालग्राम त्रिपाठी भये, जिन्होंने इस ग्रन्थकी हिन्दीटीका बनाई ।। १ ।। २ ।।

गजषष्ठांकचन्द्रेब्दे ज्येष्ठे मासि सिते दले ।।
द्वादश्यां गुरुवारे च टीका पूर्तिनगादियम् ।। ३ ।।

अर्थ – संवत् १९६८ ज्येष्ठमास शुक्ल पक्षमें द्वादशी तिथि गुरुवारको यह टीका समाप्त हुई ।। ३ ।। शुभमस्तु ।

।। समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS